ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

15 नवंबर 2003

वार्षिक शुल्क : रू. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रू 350 (विदेश में)

वर्ष 24 अंक 1

संस्थापक सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश



सदगुरू टेऊँराम महिमा भजन

तर्ज–मुहिंजी रसना जप तूं राम–

थलु–जपो साखी सतनाम, नाम जपते ही रहो !
पूरण होगें सारे काम, नाम जपते ही रहो !!
प्रभू ने मानुष जन्म दिया है नाम जपने खातिर !
खुद जपो औरों को जपाओ, भव से तरने खातिर !
छोड़ो काम क्रोध अहंकार नाम————!!
पूरण————
हृदय अन्दर हरी जान के सबसे मीठा बोलो !
छोड़ो प्यारे तात पराई जनम न विरथा रोलो !
कर उस गोविन्द को प्रणाम नाम————!!
पूरण ————————
नाम जपन का सुगम तरीका गुरू ने हमें बताया है !
ऊठत बैठत सोवत जागत जिसने मन में बसाया है !!
उसके मन को शांती तमाम नाम ————!!
पूरण ————————
नाम की महिमा बडी निराली वेदों ने भी गायी है !
साधु संत और ऋषि मुनियों को नाम की महिमा भायी है !
मिलेगा अमरापुर का धाम नाम ————
पूरण ————
नाम जपन की आदत डालो भूल के भी ना छोड़ना !
साध संगत की सेवा से भी कभी न मुंह को मोड़ना !
आशा देती ये पैगाम नाम ————————!!
पूरण होगें सारे काम नाम जपते ही रहो !!

आशा शर्मा, अलीगढ़

देवी–देवता देते हैं सब पल्ला झाड़ के
मेरे स्वामी टेऊँराम देते छप्पर फाड़ के
गुरू को मनाऊँगी मैं सदा सुख पाऊँगी
सदा सुख पाऊँगी मै दौडी–दौड़ी आऊँगी
सतगुरू मेरे बड़े दयालु, खोले दया के द्वार ये
मेरे बाबा टेऊँराम देते छप्पर फाड़ के ——
अमरापुर दरबार गुरू का लगता सबको प्यारा है !
जो जन वहाँ पे आते–जाते मिलता गुरू का सहारा है !
सतगुरू मेरे बडे दयालु भरे धन का भण्डार ये
मेरे बाबा टेऊँराम देते छप्पर फाड़ के ——
जो –जो गुरू से माँगा जिसने सो–ही सो–ही पाया है,
ना करते इंकार कभी भी, शंकर बन के आया है
सतगुरू मेरे बडे दयालु सुखों का भण्डार ये
मेरे स्वामी टेऊँराम देते छप्पर फाड़ के ——
जिस घर में गुरू चरण घुमाये,वो घर मालों–माल है,
ऋद्धि–सिद्धि वहाँ हरदम रहती, होते गुरू दयाल है
दासी के सतगुरू बडें दयालु, कर दे बेड़ा पार ये
मेरे स्वामी टेऊँराम देते छप्पर फाड़ के
देवी–देवता देते हैं सब पल्ला झाड़ के
मेरे स्वामी टेऊँराम देते छप्पर फाड़ के

शीला तनेजा
रूकमणी देवी सत्संग मंडली, नेहरू नगर दिल्ली

मेरे सत्गुरू टेऊँराम को बार बार वंदना, बार बार वंदना हजार बार वंदना
अमरापुर के सुंदर श्याम को बार बार वंदना, मेरे स्वामी सर्वानंद को बार बार वंदना
मेरे सत्गुरू शांती प्रकाश को बार बार वंदना, मेरे सत्गुरू हरदासराम को बार बार वंदना. बार बार वंदना हजार बार वंदना,
सत्गुरू टेऊँराम अपनी शरण में रखना शरण में रखना अपने चरणो में रखना, सदा तुम्ही से हो प्यार हमे ऐसी मति देना
टेऊँराम मेरे राम टेऊँराम मेरे राम.
नाम तेरे का ही आधार देना सतनाम साक्षी का बस सहारा हमें देना, विकारो को दूर करूं भवती भरपूर करूं
अपने जैसी शीलता मधुरता हमें देना, टेऊँराम मेरे राम टेऊँराम मेरे राम
चरणों में प्रेम देना पूजा नित नेम देना, मन में विश्वास देना दिल में प्रकाश देना. नाम से हो प्यार हमे यही सुमति देना,
इस दासी को सदा अपने चरणों में जगह देना टेऊँराम मेरे राम टेऊँराम मेरे राम.
जैसे मां के प्यार बिना बालक अनाथ है वैसे सत्गुरू तुम बिन ये दासी भी अनाथ है,
दया का हाथ धरना बस इतनी कृपा करना
जब तक ये सांस रहे गुरू देव तेरा हाथ रहे, टेऊँराम मेरे राम टेऊँराम मेरे राम

मीरा अंदानी, गोंदिया

कथा चूड़ाला शिखर ध्वज

ऐ मन थिरकर ले

धारावाहिक 28

परन्तु आत्म पद के अंतर रानी शीघ्र जाग रही ।
राजा की भी सेवा करे नित वृत्ति विवेक से लाग रही ।।
सतचित आनन्द रूप हमारा नाम रूप ते न्यारा है ।
जागृत सुपन, सुषोपित ,तुरिया चारों का आधारा है ।।

सत्‌गुरू महाराज जी स्वयं फरमाते थे कि भगवान राम जब कथा सुनते थे मुनि वशिष्ठ से भगवान वशिष्ठ से तो एक पहर उसको सुनते थे और तीन पहर उसका विचार करते थे सुनने का मतलब यह है कि उसका मनन करके विचार करें एकांत में बैठकर कि आज संतों ने जो कहा गुरू ने जो मेरे को बताया वो कैसे है। विचार करें ऐसा है या नहीं विचार करेंगे तो बुद्दि सूक्ष्म होगी समझ में भी आएगा, अर्थात संतो द्वारा सुनी हुई बात को याद करके फिर उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। राजा रानी ने सुना और सुनने के पश्चात् गुरू से आज्ञा लेकर के अपने राज्य में वापिस आ गए और एकांत में बैठकर विचार करने लगे कि आत्म तत्व के बारे में जो गुरू ने बताया है वो कैसा हैं गुरू ने जो भी आत्मा के बारे में बताया है वो मैं हूं किस तरह। विचार करने लगे क्योंकि विचार के बिना इस तत्व को जाना नहीं जाएगा । हमारे अंतर में निरंतर विचार उठते रहते हैं श्रृखंलाबद्ध विचार चलते ही रहते हैं । जैसे समुद्र में दिन रात लहरें उठती रहती हैं ऐसे ही हमारे अंदर निरंतर विचार चलते रहते हैं। इन विचारों की श्रृखंला अर्थात् संकल्प–विकल्प को ही मन कहा जाता है । मन का कोई अस्तित्व है नहीं । मन का स्वरूप यही विचार हैं और इन निरंतर चलते अनर्गल विचारों को रोकने के लिए आत्मतत्व का विचार करना ही पड़ेगा और कुछ भी नहीं करना । बुल्लाशाह थे, उनसे किसी ने पूछा कि हरि किए पाइए ? तो उसने कहा कि एथो पटके उथे लाइए क्या कर रहा था वह चावल की खेती कर रहे थे । उसमें चावल के पोधे को एक स्थान से उठाकर दूसरी जगह लगाना पड़ता है तभी खेती संभव है । यही जवाब उस व्यक्ति को उन्होंने दिया, हरि ऐसे ही नहीं मिलेंगे अपने मन को इस तरफ (संसार) से हटाकर उस तरफ (परमात्मा) में लगा दो बस।

कबीर मन तो एक है भावें जहां लगाए।
भावें हरि की भक्ति कर भावें विषय कमाए ।।

एक ही मन है तो जहां लगाऐगें उधर लगेगा। अगर संसार की तरफ हमारा मन लगा है तो परमात्मा की तरफ कैसे लगेगा, उसी समय में और अगर परमात्मा में लगे तो फिर संसार की तरफ ना लगे ।

मंजिल अगम देश की

परन्तु ऐसा तो हमारा गहरा संबंध संसार से बन गया है कि अगर भगवान का भजन करने भी बैठें तो मन संसार का ही चिंतन करता है संसार के ही विचार उठते हैं । परन्तु धीरे धीरे व्यक्ति अगर ये तीव्र इच्छा कर ले कि मुझे आत्मतत्व की प्राप्ति करनी है और उस तरफ चलने के लिए संतो का संग करके, उनका उपदेश लेकर विचार करना शुरू कर देता है तो फिर जो मन जगह– जगह भाग रहा है वो धीरे धीरे एक जगह आ जाता है। रूक जाता है।

जैसे किसी चीज की बहुत जरूरत होवे या किसी से बहुत प्रेम होवे तो मन रूक जाता है। बस उसी जगह लग जाता है। जैसे पुत्र कभी बाहर गया हुआ हो और उसको आने में देर हो जावे तो माता का सारा ध्यान पुत्र में लग जाता है बस उसी के बारे में उसका विचार चलता है और कोई कहे कि भाई भोजन खा लो या कुछ कर लो । वो कहती है– अभी मन नहीं है पहले मेरा पुत्र आ जाए अर्थात् किसी चीज में उसका मन नहीं लगता और कोई ख्याल उसे नहीं आता बस एक ही ख्याल चलता

रहता है ! इसी तरह जब मन में आत्म तत्व को प्राप्त करने की, अपने आपको जानने की जिज्ञासा हो तो और जगह से मन हटकर विचार हटकर आत्मतत्व में विचार लगता है । ये आत्मा कैसे है ? मैं कौन हूँ ? कैसे हूँ ? विचार करेगा शास्त्र पड़ेगें ? किसी से पूछेगें, संतों के संग में जाऐगें । उत्कंठा ही आदमी को सारा कुछ प्राप्त करवा देती है । उत्कंठा है तो आदमी कहीं न कहीं से, कुछ न कुछ प्राप्त कर लेगा जहाँ चाह वहां राह।

तो विचार तभी हो सकता है जब उत्कंठा हो, फिर विचार होते होते क्या होता है ? विचारों का अंत हो जाता है। फिर एक ही विचार रहता है, अपने आपको जानने का ।

समझें जैसे किसी आदमी के 100 दुश्मन होवें सौ में से धीरे धीरे निन्यानवे दुश्मन मर जाऐं बाकी एक दुश्मन रह जाए। उसको मारने में कोई समय लगेगा ? नहीं ! जो निन्यानवे को मार सकता है वो एक को भी मार सकता हैं।

ऐसे ही विचार करते करते जब सब विचारों का अंत हो जाता है और फिर एक जो विचार रहता है कि मैं आत्मा हूँ ,उसका भी अंत करना पड़ता है। फिर कहना नहीं पड़ता, सोचना नहीं पड़ता। करते करते क्या होगा उस विचार का भी अंत हो जाएगा । जब उस विचार का भी अंत होता है तब जाकर के उस आत्मतत्व की प्राप्ति होती है, उसका अनुभव होता है। वहाँ पर कोई भी विचार नहीं। इतना भी विचार नहीं चलेगा कि अहं ब्रह्मस्मि ।

जब जिस समय अनुभव होता है तब कोई भी विचार नहीं। विचार शून्य अवस्था ही आत्म सत्ता है। महासुन्न मंडल है गुरू महाराज जी फरमाते थे, तो उसको प्राप्त करने के लिए एकांत में विचार करना पडेगा। अकेले में बैठ जाएं और विचार करें कि मैं कौन हूँ ? गुरू द्वारा शास्त्र द्वारा संतों द्वारा बताई गई बात का विचार करें । राजा रानी भी विचार करने लगे ।

आत्म पद की उत्कंठा

गुरू के ज्ञान को प्राप्त करके अपने राजभवन में वापिस आकर एकान्त में विचार करने लगे। आगे गुरू महाराज जी कहते हैं :–

आत्म पद के अंतर रानी शीघ्र जाग रही रानी को बड़ा विचार था। पहले भी आया कि जो योगी जुगत सिखावे शीघ्र वो सीख जाती है। वो राजा इतना जल्दी नहीं सीख पाता था योग की युक्तियां । परन्तु रानी शीघ्र सीख जाती थी क्योंकि वो भोगों की इच्छा कर रहा था। भोगों का ध्यान जहाँ पर है वहां पर योग की बात कैसे संभव है। पर रानी की चाहना बहुत हुई आत्मपद में तो उसको जल्दी प्राप्त होता है। जिसकी जितनी इच्छा होवेगी उतना जल्दी उसको प्राप्त होवेगा ।

जितना खर्च किया जाता है उतना सामान ज्यादा आता है। जितनी चीनी डालोगे, जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा । जितनी चाहना हमारे अंदर होगी, उतना समय कम लगेगा । चाहना की तीव्रता, उत्कंठा की तीव्रता लक्ष्य प्राप्ति में समय को निर्धारित करती है।

एक संत बैठा था जंगल में, एक पेड़ के नीचे। एक व्यक्ति ने उससे कहा कि अमुक गांव कहाँ पर है ? उस जगह से वो गाँव बिल्कुल सीध में था अतएव संत ने कहा कुछ नहीं, उठा और चलने लगा बोला– मेरे पीछे आ जाओ । व्यक्ति ने सोचा– ये संत तो बड़ा अच्छा है मेरे को ले के चलता है– बोला चलो आप आगे, मै पीछे आता हूँ । सीधा सीधा चलो यहाँ से। सीधा सीधा चलने लगा। 5 मिनट चला फिर संत ने कहा –आप 15 मिनट और चलोगे तो जो भी गाँव आएगा, वो वही गाँव आएगा जिसके बारे में आप पूछ रहे हैं। उस व्यक्ति को बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने कहा– महाराज ! आप वहीं से बोल देते मेरे को कि बीस मिनट का रास्ता है। संत ने कहा– मेरे को क्या पता तू कौन सी गति से चलता है। जब तेरी गति देखूँगा तो बता पाऊँगा कि कितनी देर में पहुँचेगा। अब मैंने तेरी गति देख ली है उसी गति

से अगर तू जाएगा तो 15 मिनट में पहुँचेगा । ये बात गति के ऊपर है । जैसे हमारे को दिल्ली जाना है, या किसी भी निर्धारित लक्ष्य पर पहुँचना हो तो वहां कितनी देरी पहुंचने में लगेगी, ये बात गति के ऊपर है । हवाई जहाज से जाएगें तो जल्दी पहुंचगें, फिर रेलगाड़ी से जाओ तो पहुंचने का समय बदल जाऐगा । फिर कार से जाओ, बस से जाओ तो समय अलग होगा । जिस वाहन की जैसी गति होगी उसी के अनुसार हम जल्दी या देर में पहुंचेगें। अतएव हमारी चाहना की तीव्रता, उत्कंठा की तीव्रता कितनी है । हम जानने की इच्छा कितनी तेज रखते हैं , तत्व को पाने की जितनी लगन हमारे अंतर में ज्यादा होगी उतनी ही जल्दी उस तत्व की प्राप्ति होगी और जितनी कम होगी तत्व की प्राप्ति उतनी ही देर से होगी।

रानी के अंदर भी उत्कंठा की तीव्रता ज्यादा थी और राजा के अंदर कम थी इसीलिए रानी शीघ्र जागी और जानने के पश्चात् भी अपने कर्त्तव्य कर्म को त्यागा नहीं, पूर्ववत् अपनी मर्यादा का पालन किया।

ब्रह्मज्ञानी बंधन ते मुक्ता

गुरू महाराज जी का वचन है कि आत्म ज्ञानी ब्रह्मज्ञानी भी संसार में मर्यादा के अनुसार चलते हैं वास्तव में हर कर्म से मुक्त हैं उन्हें कर्म करने की कोई जरूरत ही नहीं। किसी भी कर्म करने का बंधन नहीं उनके ऊपर परन्तु ब्रह्मज्ञानी, आत्मज्ञानी भी दूसरों के भले के लिए शुभ कर्म करता है, अच्छी तरह चलता है, मर्यादा में चलता है ।

गुरू महाराज जी फरमाते थे कि देखो संत महात्माओं के ऊपर बंधन नहीं । भगवान अर्जुन को कहते हैं कि मेरे ऊपर कोई भी बंधन नहीं है। मेरे को तीनों लोकों में कोई भी कर्म करने की जरूरत नहीं परन्तु मैं करता हूँ । क्यों करता हूँ ? मम् वर्तमान् वर्त्न्ते मुझे देखकर मेरा अनुसरण करके दूसरे लोग वे कर्म करेगें । अगर मैं कर्म करना छोड़ दूं तो लोग ये कहकर महाजनो ये न गता सपंथा महापुरूष जिस रास्ते पर चलते हैं वही प्रमाणित रास्ता है, वही श्रेयस्कर रास्ता है उसी रास्ते का अनुसरण करेगें ।

परन्तु इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि महापुरूष जो करते हैं वो नहीं करना चाहिए बल्कि महापुरूष जो कहते हैं वही करना चाहिए ।

महापुरूष समर्थ हैं उनकी स्थिति पता नही कहां पहुंच चुकी है, वे कुछ भी कर सकते हैं। अगर उनके कार्यो का अनुसरण किया जाएगा तो व्यक्ति उस तत्व की प्राप्ति नहीं कर सकता । जिसके लिए वो महापुरूषों की शरण में आया है । पता नहीं किस महापुरूष का क्या विचार है अपने अनुसार कोई कैसे चलता है वो आजाद है, स्वतंत्र है, बंधन मुक्त है, निर्भय है । अतएव उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए जहाँ तक हो सके उनके कार्यो का अनुसरण न करके उनके द्वारा जो उपदेश हमें दिये जाते हैं कि ऐसा ऐसा करो वैसा ही हमें करना चाहिए ।

रानी भी उस आत्म पद में जाग गई परन्तु फिर भी संसार की रीति के अनुसाार संसार के कार्यो को करते हुए संसार में चलने लगी।

राजा की भी सेव करे नितवृत्ति विवेक से लाग रही राजा की भी सेवा करने लगी क्योंकि स्त्री का कर्त्तव्य है कि अपने पति की सेवा करे । गुरू महाराज सुन्दर भजन सुनाते थे कि पति से प्रेम का नाता निभाना नारी को चाहिए और सुन्दर इतिहास सुनाते हुए कहते थे कि जो सती अपने पति की सेवा करती है वो सभी कुछ प्राप्त कर सकती हैं । सभी कुछ उसके अधीन हो जाता है । रानी भी अपने पतिव्रत धर्म निभाते हुए राजा की सेवा करती थी, परन्तु इतना सब कुछ करते हुए भी उसकी वृत्ति विवेक में, अपने आत्म तत्व में लगी हुई थी। ऐसी वृत्ति बनी हुई थी कि सभी कुछ करते हुए स्वयं को अलग जान रही थी, कहते हैं हथ कार विच ते मन यार विच यानी हाथों से भी कार्य करो और मन को परमात्मा के चरणों में लगा दो । रानी की ऐसी सुन्दर वृत्ति बनी हुई है । गुरू महाराज से प्रार्थना करें कि हमारे ऊपर भी ऐसी कृपा करें जो हमारा ध्यान भी उनके चरणाविंदों में लगा रहे। आगे जैसे गुरू महाराज जी बताऐंगे वैसे हम भी श्रवण करेगें।

4 दिसंबर 2003

गीता जयन्ती महोत्सव

वस्तुतः श्री मद्भगवद्गीता की महिमा अनिर्वचनीय ही है किन्तु वाणी की पवित्रता के लिये 'गीता–जयन्ती ' के परम पावन पर्व पर कुछ कहना भी अभीष्टित है। स्वयं भगवत मुखारविन्द से गेयित होने के कारण इसका नाम श्री मद्भगवद्गीता है। इसमें वेदान्तिकब्रह्मविद्या का सारतत्व समाहित है। इसमें वेदों के त्रिकांडों (कर्म,उपासना,ज्ञान)का समन्वित विवेचन है गीता के बारे में व्यास जी का कथन है कि 'गीता सुगीता कर्तव्या' गीता सुगीता करने योग्य है। इसमें मनुष्य मात्र का अधिकार है।भेदभाव की संकीर्णता नहीं है। भेदभाव से समाज का बिखराव होता है। गीता समत्व योग की शिक्षा देती है कर्म– कौशल का पाठ पढ़ाती है। व्यवहार में परमार्थ कला का अदभुत–शिक्षण देती है।

गीता धर्म संमूढ़ चित से कायरता रूपी दोष को हटाकर अनाचार और अन्याय से संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। अकर्मण्यता ,आलस्य,प्रमाद, परावलम्बन की निन्दा करती है। सकामी को कृपण और निष्कामी को उदार बतलाती है। वेदार्थ लक्ष्य से गीता के कृपण शब्द का अर्थ आत्मज्ञान– हीन मनुष्य से है। गीता में ज्ञान योग (आत्म–विज्ञान) और कर्म–योग (कर्म–बन्ध–मुक्तता) का सम्यक प्रतिपादन किया गया है। आत्मा की नित्यता के ज्ञान से शोक का नाश किया है और कर्म– योग की कुशलता से मोक्षप्रााप्ति का घोष किया है।

गीता 'आत्मवत सर्वभूतेषु ' की प्रक्रिया से विश्व –बन्धुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का प्रचार–प्रसार करके परम– शान्ति का मंत्र देती है। इसी से गीता को 'सर्व– शास्त्र वेदान्तमयी कहा गया है। गीता , गाय , गंगा , गोदावरी ,और गायत्री से भी बढ़कर अनुपमेय है। यही कारण है कि विश्व में केवल गीता– ग्रन्थ की ही जयन्ती मनाई जाती है। भगवत वचनामृत भी है कि 'गीताश्रेयSहंतिष्ठामि , गीता में चोत्तमं गृहम। गीता ज्ञानमुपाश्रित्य त्रींल्लोकान पालयाम्यहम्। ।मैं गीता के आश्रय में रहता हूँ। गीता मेरा दिव्य मंदिर है। मैं गीता– ज्ञान का सहारा लेकर ही तीनों लोकों का पालन करता हूँ। गीता–ग्रन्थ का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। यह इसकी लोकप्रियता और उपादेयता का अभूतपूर्व उदाहरण हैं आत्म–स्वरूप , समत्वयोग , कर्मकौशल , व्यवहार पटुता ,एवं दार्शनिकता का प्रकाश करने के लिए गीता अनघ भास्कर की तरह देदीप्यमान है।गीता अनुपमेय है। यथा 'यज्ञ,दान ,तप, व्रत , उपवासा –तीरथ , संयम, गुण , अभ्यासा।

और हुअमित जतन कर कोई नहिं अनन्य गीता सम होई इत्यादि प्रमाण हैं अस्तु इस गीता –जयन्ती पर हमे गीतोक्त उपदेशों को व्यवहार में लाने का संकल्प करके परमार्थ सिद्वि की ओर अग्रसर होना चाहिए। यही सत्यम् –शिवम्– सुन्दरम् मांगलिक भावना का उपक्रम है।

लेखक

अनन्य (प्रेम–प्रकाशी) प्रेम–प्रकाश–आश्रम (मुरैना)

भजन

मेरे टेऊँराम जैसा , न कोई है न कोई होगा ।
सारे जग में महान, इनकी ऊँची है शान ।
झुका धरती आसमान देखा ।।
जिनको देते प्रेम की मस्ती, सुध बुध अपनी भूल गया ।।
तीर चलाया नजरों से जब, इनका वोतो ही ही गया ।।
ये तो हाजिरां हुजूर इनका अनोखा है रूप ।।
इनकी आँखों में नूर देखा ।।
मेरे टेऊँराम जैसा , न कोई है न कोई होगा ।।
पाके नूरानी जल्वे इनके, चरणों में आ बैठे ।।
दिल में बसा के मोहनी मूरत, कब से किनारा कर बैठे ।।
मेरा दिल भी कुरबान, मेरी जान भी कुरबान ।।
देखा जाएगा जो होगा।।
मेरे टेऊँराम जैसा , न कोई है न कोई होगा।।
तेरी आस लगा के दाता, जीते हैं तेरे सहारे पे।।
मिल जाएगी वो झलक प्यारी, आ बैठे तेरे द्वारे पे।।
तू ही मेरी सरकार ,दाता तेरी जय जय कार ।।
सबकी नजरों में है देखा।।
मेरे सतगुरू के जैसा .... ।।

प्रेम प्रकाशी शालू मदान (हिसार)

माला फेरत जुग भया

एक नवयुवक नित्य प्रति दिन मंदिर जाता और मां भगवती की मूर्ति के आगे बैठ आसन लगा, मां की पूजा करता ! नित्य कुछ न कुछ मां से मांगता ! मंदिर का पुजारी रोज उसे देखता और भीतर ही भीतर उसके पूजा करने की क्रिया पर हंसता ! एक दिन वह माला जपता जाता और मां से अपनी मांग की पूर्ति की कामना व्यक्त करता जाता ! पुजारी को माला दिखाते हुए वह युवक बोला पुजारी जी यह चंदन की माला है ! सुना है चंदन की माला फेरने से पूजा मन लगाकर शान्ति से होती है ! पुजारी ने "हा" में सिर हिलाते हुए उत्तर दिया ! वह जानता था कि युवक का मन पूजा में कम दिखाने में ज्यादा लगता है या माला फेरकर मां भगवती को प्रसन्न करके नित्य अपनी जरूरतो को पूरा करना होता है !

कुछ दिन पश्चात् पुजारी ने देखा आज युवक के हाथ में चंदन की माला की जगह रूद्राक्ष की माला है और वह उस पर जाप कर रहा है ! माला करने के बाद वह पुजारी जी के पास जाकर बोला पुजारी जी हमारे पंडित ने बताया है कि रूद्राक्ष की माला पर पूजा जल्दी सिद्ध होती है, इसलिए हमने चंदन की जगह रूद्राक्ष की माला ले ली ! पुजारी फिर युवक की बात सुन बस मुस्करा दिया ! दो –चार दिन के बाद वह तुलसी की माला ले आया ! तुलसी की माला देख पुजारी खुद ही बोल पड़े "बेटा जरूर तुम्हारे पंडित ने मोक्ष प्राप्ति के लिए तुम्हें तुलसी की माला बताई होगी ! " पुजारी की बात सुनकर युवक हंसता हआ मंदिर से बाहर निकल पड़ा ! कुछ दिन बाद युवक जब मंदिर आकर बैठा तो उसके हाथ में कोई माला नहीं थी ! वह हाथ की अंगुलियों पर गिनता जाता ! बीच में आंख खोलकर उंगलियों की तरफ देखता, कभी मां की मूर्ति की तरफ देखता! पुजारी दूर से देखता रहा ! वह जान रहा था कि युवक का मन पूजा में नहीं लग रहा है ! जब वह उठा तो पुजारी ने युवक से पूछा कि आज तुम्हारी माला कहां गई ? पूछने पर युवक ने कहा माला फेरने से मेरा ध्यान पूजा पर कम गिनती पर ज्यादा रहता था और मन भटक जाता था ! अगले दिन प्रातः पुजारी को मंदिर से युवक की आवाज सुनाई पड़ी ! पुजारी उठा ! जाकर देखा ! युवक माँ भगवती की मूर्ति के आगे बैठा बोलता जा रहा था माला–माला, पुजारी जी यह देख अचम्भित हो गये कि आज उसका यह कौन सा जप चल रहा है ? पुजारी ने देखा माँ भगवती के आगे रखे चढ़ावे पर दृष्टि रखकर वह युवक बोलता जा रहा था ! 'माँ–ला यह देख पुजारी युवक के पास जाकर बोले बेटा यह आज तुम कौन सी पूजा कर रहे हो ? यह सुन युवक बोला पुजारी जी मेरा मन उंगलियां फेरते–फेरते मां के आगे रखे चढ़ावे पर चला गया और मेरे अन्दर उसको प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो गई ! क्या करता जन्म लेते ही तो मां से मांगने की आदत है , बचपन से ही तो ही आवश्यकता की पूर्ति माँ ही तो पूरी करती है सो माँ से ही कह रहा था माँ–ला, माँ–ला ! युवक की बात सुन पुजारी जी हंसने लगे, बोले अब माला का अभ्यास छोड़ो उसे फेरते–फेरते अगर उसके संग फेरा न लगाया तो फेरना व्यर्थ जाता है ! अब तुम चिन्त को शुद्ध करके अपने भीतर अपना ध्यान लगाओ और हृदय रूपी माला में प्रभु का नाम बसाओ , जिस तरह तुम्हारी सांस आती है जाती है! उसकी कोई गिनती नही होती है आती है जाती है उसी तरह अपनी हर सांस में प्रभु का नाम जपो वह तुम्हारी असली माला होगी ! पुजारी की बात सुन युवक बहुत लज्जित हुआ और उसने पुजारी की बात मानते हुए अपनी गलतियों का सुधार किया ! कुछ दिन में ही वह युवक अच्छा साधक बन गया! उसका जप माला और उंगलियो से अजपा जप में परिवर्तित हो गया !

मनुष्य जब अपने जीवन से ऊब जाता है तब वह यह सोचकर परमात्मा की तरफ झुकता है कि शायद प्रभु की पूजा– अर्चना करने से उसको शान्ति मिलेगी और उसके आगे प्रार्थना करने से उसकी हर आवश्यकता की पूर्ति शीघ्रातिशीघ्र हो जायेगी ! ऐसा सोच कर वह पूजा –पाठ शुरू करता है ! हाथ में तो वह माला ले लेता है परन्तु उसके भीतर के कलुषित विचार नहीं जाते ! वह लाख ऊपर से भगत बने पर भीतर उसका अन्तर्मन अपनी इच्छाओं की पूर्ति की मांग ही करता रहता है ! उसका बाहय रूप मात्र दिखावा होता है !

संसार में आकर वह अपनी राग माला में फंस जाता है जहां वह परमात्मा से कम अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु दुनियादारी में लगा रहता है !

"हरि हरि कहते फिरे चढ़ा न हरि का रंग,'
हरि में आते कैसो जो मन में लागो जंग!"

और या तो मनुष्य बाहय आडम्बर में फंसा स्वंय को ठगता है और ऊपरी भेष तो भक्तो जैसा होता है और भीतर जग प्रपंच मन से नहीं जाता !

"माथे पे चंदन गले में माला पहन के चोला भगवा,
भेष बनाये हंस–के,जैसा भीतर मन है कौवा ! "

मनुष्य को चाहिये कि वह समस्त संसारी बंधनो से दूर रह कर शुद्ध मन शुद्ध भाव से एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान करे , ताकि वह भक्ति मार्ग पर चलते हुए परमात्मा का अनुभव कर अपनी साधना सफल करे !

शुद्ध हृदय से फेर के माला प्रभु के दर्शन पाओ ,
भूरानी' कहे हरिनाम को जप कर मन का मैल हटाओ!

हीरालाल भूरानी, खैरथल

संकल्प जीवन का सार है

जिन्दगी की राहों में कुछ ऐसे किस्से देखने को मिलते हैं जिनका कारण जान पाना हमारी समझ से परे होता है ! एक बार भोपाल जाते हुये आँखों देखी घटना है चलती ट्रेन में से महिला का पैर फिसल गया और वो ट्रेन के नीचे आ गयी, कुछ देर के लिये मैने अपनी आँखें बन्द कर ली और सोचा यह दर्दनाक हादसा देखने की मुझमें हिम्मत नहीं है ट्रेन की चैन खीचने पर कुछ क्षण बाद ट्रेन रूकी जो मैं कल्पना कर रही थी , वैसा नहीं हुआ, महिला ट्रेन के नीचे से सुरक्षित बाहर निकल आयी और दौड़कर पुनः ट्रेन में सवार हो गयी , एकाएक मन में विचार आया "जाको राखे सांईया मार सके न कोय" कोई तो ट्रेन के नीचे से भी सुरक्षित निकल आता है तो कोई मात्र एक कॉटे के चुभने से , या फिसलना ही उसकी मृत्युका कारण बन जाता है ! कोई व्यक्ति दिन–रात मेहनत करके भी दो जून की रोटी को तरसता है, तो कोई बैठे बिठाए ही किसी विरासत का वारिस बन जाता है, आखिर ये है क्या, इन सभी घटनाओं को देखकर तो ऐसा लगता है व्यक्ति के जीवन की डोर उसके हाथ में नही अपितु कहीं और ही है , ऐसे ही रहस्यमय प्रकरणों की पुनरावृत्ति ने प्रमाणित किया है "भाग्यवाद" के सिद्धांत को इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन उसके भाग्य पर निर्भर करता है !

परन्तु ये सोचने पर हम मजबूर हो जाते हैं मनुष्य का जीवन जिस भाग्य बल से इतना प्रभावित होता है ! उसका निर्माण किसने किया ? ईश्वर ने या मानव ने ? यदि ईश्वर ने तो सभी के भाग्य में इतनी भिन्नता क्यों ? वह निष्पक्ष परमपिता सबका भाग्य अलग–अलग कैसे बना सकता है ? अर्थात् मानव के भाग्य का निर्माण ईश्वरेच्छा से नहीं होता ! हमारे शास्त्रों के अनुसार स्वयं मनुष्य के कर्म ही उसके भाग्य का आधार है, कर्म रूपी बीज द्वारा ही भाग्य रूपी वृक्ष जन्म लेता है ! एक अस्वस्थ बीज कभी भी स्वस्थ वृक्ष का जन्मदाता नहीं बन सकता ! इसी प्रकार निम्न कोटि के कर्मों से श्रेष्ठ भाग्य के बीज का प्रस्फुटित होना असंभव है , जो बोएगा सो पाऐगा ' का सिद्धांत ही मनुष्य के कर्म व भाग्य का समीकरण बनाता है ! पर क्या मानव भाग्य के समीकरण को पूरी तरह से हल कर सकता है या वह भी निरीह प्राणियों की तरह परिस्थितियों की मार सहने को बाध्य है? निःसन्देह ईश्वर का सजीव प्रतिरूप ईश्वर का अंश मनुंष्य ऐसी किसी विवशता का गुलाम नहीं हो सकता ! डॉ राधाकृष्णन ने एक जगह कहा है "यदि परिस्थितियाँ इंसान को गढ़ती है , तो वह भी परिस्थितियों को गढ़ सकता है ! मनुष्य स्वतंन्त्र कहां है – स्वतन्त्र कर्मों के आधार पर वह भाग्य का निर्माण करता है, वैसे ही संकल्प बल से उसे संवार भी सकता है वह चाहे तो शुभ कर्मों द्वारा आकाश के तारों को अपने हाथों की लकीरों में छुपा ले और चाहे तो अकर्मण्य होकर पाताल के अंधकार को अपनी किस्मत में लिख ले ! विद्वान पाणिनी का जीवन ऐसे ही संकल्प युक्त पुरूषार्थ का उदाहरण है, अपने बाल्यकाल में वह एक मंदबुद्धि बालक हुआ करते थे , उन्हें पढाई से विमुख देख उनके गुरू एक दिन गम्भीरता से उनके हाथ की रेखाओं का अध्ययन करने लगे पाणिनी ने पूछा गुरू जी क्या ढूंढ रहे हों ,गुरू बोले विद्या की रेखा उत्सुकता से पाणिनी ने पुनः पूछा मेरे हाथों में विद्या की रेखा है या नहीं ? प्रश्न सुनकर गुरू उदास हो गये , बोले नहीं बेटे , तेरे भाग्य में विद्या की रेखा नहीं है , तुम कभी भी नही पढ़ सकते , पाणिनी का अंतस चीत्कार कर उठा ! तत्क्षण पाणिनी एक छुरी उठा लाए और दृढ़ स्वर में बोले मै पढूंगा, अपने हाथ की रेखाओं को बदल डालूँगा आप मुझे बताइये विद्या की रेखा कहां होती है , निर्दिष्ट स्थान पर उन्होने चाकू से एक लकीर खींच दी, इसके बाद अपने वास्तविक जीवन में श्रम और अनवरत अभ्यास करते हुए वही पाणिनी भविष्य में संस्कृत के विख्यात पंडित बने, संकल्प पुरुषार्थ ने उनके भाग्य का पुर्ननिर्माण कर दिया !

संकल्प और पुरूषार्थ ही जीवन का सार है ,इस के द्वारा ही भाग्य का निर्माण होता है जिसने अपने जीवन में संकल्प और पुरूषार्थ को अपना लिया, वो प्रत्येक असम्भव कार्य भी कर सकता है , ये संकल्प ही है जिस पर धरती, आसमान, सूरज , चाँद तारे टिके हैं अ अनवरत पुरूषार्थ कर अपना जीवन अमर किया है , अ मनुष्य भी किसी कार्य के लिये संकल्प कर ले तो अव ही वो भी अमरत्व को प्राप्त कर सकता है !

डॉ. अंजलि ज्ञानानी, ग्वालियर

कैकेयी का अनुताप

" यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को!"
चौकें सब सुनकर अटल कैकयी –स्वर को !
सबने रानी की और देखा,
वैधव्य–तुषारावृत्ता यथा विधु–लेखा!
बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा ,
वह सिंही अब थी हहा! गौ मुखी गंगा "हा" , जनकर भी मैने न भरत को जाना, सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना ! यह सच है ! तो फिर लौट चलो घर भैया अपराधिन मैं हूँ ! तात, तुम्हारी मैया ! दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है ,पर अबलापन के लिए कौन सा पथ है ? यदि मै उकसाई गई भरत से होऊँ, तो पति–समान ही स्वयं पुत्र भी खोऊँ! ठहरो , मत रोको मुझे, कहूँ सो सुन लो , पाओ यदि उसमें सार उसे सब चुन लो ! करके पहाड सा –पाप मौन रह जाऊँ? राई–भर भी अनुताप न करने पाऊँ? थी सनक्षत्र शशि–निशा ओस टपकती, रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती ! उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी , सब में भय, विस्मय और खेद भरती थी " क्या कर सकती थी मरी मंथरा दासी मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी ! जल पंजर–गत अब अरे अधीर, अभागे , वे ज्वलित–गत अब अरे अधीर अभागे, वे ज्वलित भाव थे स्वयं तुझी में जागे ! पर थ केवल क्या ज्वलित भाव ही मन में ? क्या शेष बचा था कुछ न और इस जन में ? कुछ मुल्य नहीं वात्सल्य–मात्र क्या तेरा ? पर आज अन्य सा हुआ वत्स भी मेरा थूके मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके, जो कोई जो कह सके कहे, क्यों चुके? छीने न मातृ पद किन्तु भरत का मुझसे , हे राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे ? कहते आते थे यही अभी 'माता न कुमाता , पुत्र कुपुत्र भले ही !'
अब कहे सभी यह हाथ ! विरूष विधाता – 'हे पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता !'
बस मैने इसका बाह्य –मात्र ही देखा,! दृढ़ हृदय न देखा , मृदुल गात्र ही देखा परमार्थ न देखा , पूर्ण स्वार्थ ही साधा, इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा ! ,युग–युग तक तक चलती रहे कठोर कहानी –
'रधुकुल मे भी थी एक अभागिन रानी ' ! निज जन्म –जन्म ने सुने जीवन यह मेरा – 'धिक्कार ! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा ! ' "सौ बार धन्य वह एक लाल की माई , जिस जननी ने है ! जना भरत सा भाई ! "
पागल –सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई "सौ बार धन्य वह एक लाल की माई!"

नितिन चन्दनानी जयपुर

सत्संग एक आवश्यकता

इस संसार को सन्त महापुरुषों ने स्वार्थमय नाशवान् ,झूठी रचना और असत्य वर्णित किया है। परमात्मा प्रभु एवं सन्त महापुरूषों की संगति को सत्य रूप बताया है। महापुरूषों का सत्संग इस जीव को पूर्णसंचित शुभकर्मों के फलस्वरूप ही प्राप्त होता है। सन्त महापुरूषों की संगति में जाने से जीव के सब संशय भ्रम आदि नष्ट हो जाते हैं। स्थायी सुख शान्ति का भण्डार जो भक्ति ज्ञान वैराग्य है, उसको प्राप्त करके मानव अपने मन को दिव्य रंग में रंग लेता है। "यही सत्य है। "

"संग" क्या है ? एक पदार्थ का दूसरे के साथ मिलाप ही संग कहलाता है वस्तु मात्र जो दृष्टिगोचर हो रहा है वह एव दूसरे के मिलाप से ही बना है पृथ्वी में बीज को बो देने से जैसे जल के संग से अंकुर फूट आते हैं और और बड़े बड़े वृक्ष बन जाते हैं समय पर मीठे मीठे फल देते हैं और ठंडी ठंडी हवा भी यह सब संग का प्रभाव है सच्चे संग से क्या नहीं होता हम संग का प्रभाव देखें तो सीमेन्ट ,रेत, जल एवं एक एक ईंट ईंट के मिलाप से भव्य भवन एवं मंदिर बन जाते हैं। संग से अच्छा और बुरा दो प्रकार के फल प्राप्त होते हैं विष और अमृत, विष के खाने से मृत्यु हो जाती है और अमृत के पीने से अमर हो जाता है इसलिए मनुष्य को साधु सज्जन एवं ज्ञानी पुरुषों का ही संग करना चाहिए यानि साधु संगति को ही सत्संग कहते हैं सत्संग की महिमा अपार है।

हरीशचन्द चंचलानी (जयपुर)

गुरुकृपा से मुक्ति संभव

(हथीन में सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज के मुख से प्रवाहित अमृत)

स्वामीजी ने भजन गाकर बड़ी सरल वाणी में समझाया ।

करो कृपा गुरू मुझ पर शरण तेरी आया हूँ , सचा तुम हो मित्र सतगुरू– शरण तेरी आया हूँ।।

जगत में कोई नहीं मेरा सिर्फ आधार है तेरा , हरो भव काल का फेरा– शरण तेरी मैं आया हूँ।।

सतगुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज बताते हैं कि संसार के सभी पदार्थ मिल जायेंगे। लेकिन मन की शांति और मुक्ति गुरू की कृपा के बिना प्राप्त नहीं होती। हम अच्छी तरह से उनकी शरण जाऐं । मन, कर्म, वचन से उनको मानें तो हमारा कल्याण हो जाएगा । इंसान का शरीर तो सबको प्राप्त होता है इंसानो के गुण दुर्लभ होते है सोलह शिक्षाओं मे जीवन का पूरा सार छुपा हुआ है मनुष्य को अपने मन में छुपे हुए अवगुणों को देखना चाहिए व उनको छोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। थोड़ा विचार कर अगर हम खुद में झाकेंगे तो अपने गुण अवगुण दोनों ही सामने आ जाऐंगे।

यह संसार नाशवान है उसके साथ अपने को जोड़ा तो दुख पाया। उस अविनाशी के साथ जोड़ो तो बेड़ा पार हो जाएगा। जन्म के साथ मृत्यु ही जीवन का सत्य है, इस सत्य को जिसने जान लिया उसका मन प्रभु परमात्मा के नाम सुमरन में लग जाता हैं छोटी सी उम्र जीवन के पिछले दिन कैसे बीते जैसे एक क्षण अभी –अभी गया हो। दूर सफर पर जाना हो तो हम कितने दिन पहले तैयारी करते हैं। और कितना सारा धन ले जाते हैं और साथी ले जाते हैं। और परलोक पर जाने के लिए हमने कुछ नहीं किया ना कोई साधन किया ना शुभ कार्य धन कमाया ना संतो को अपना साक्षी बनाया । छोटा सा धर्म भी छोटा सा शुभ कार्य भी और थोड़ा सा नाम सुमरन भी विपत्ति में सहायता करता है। तुम उसे भी ना करके संसार के वैभव के पीछे पड़े हो। इसीलिए सतगुरू की शरण में जाना चाहिए पूरण महापुरूष की बांह पकड़नी चाहिए।

संसार की बातों में आकर गुरू की वाणी को नहीं भूलना। सतगुरू सर्वानंद जी ने भी अपने जीवन में सतगुरू की वाणी को ही अपने जीवन का आधार बनाया । सतगुरू के पावन चरणों में जिसने तन मन वार दिया अपने जीवन की नैया को उसने भव से पार किया। भजन गाकर स्वामी जी ने सत्संग समाप्त किया।

नाम स्मरण में अनूठा स्थायी आनन्द है

(पिम्परी पूना में सदगुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज के अमृत वचन)

हर मेली है सन्त जन हरि से देत मिलाय। कहे टेऊं छोड़त नही जो जन शरणी आये।।

साध संगति में रोजु अची मां गोविन्द तुहिंजा गुण गाया, प्रभु तोखे आऊं परिचांया ।।

मानव की इच्छा पूरी होती हो तो विश्वास होता है आध्यात्मिक राह कर्म करते वृत्ति डगमग न हो

निश्चल मन से मिलत है निश्चल आत्म राम, टेऊँ मन निश्चल करे पाओ सुख का धाम

संत महापुरूष का शरीर भी हमारे जैसा होता है पर उन्होंने इसका महत्व जानकर गुरू ज्ञान शिक्षा उपदेश धारण क सिद्धी प्राप्त कर ली। नाम सुमरण द्वारा तत्व की प्राप्ति परमात्मा की प्राप्ति की, घर परिवार को छोड़ना नहीं है। फर्ज अदा कर हुएं उसी में से समय बचाकर सेवा सुमिरन साधन करके जीवन सफल बनाना है। द्रोपदी नें कपड़े का टुकड़ा ऋषि को दान कि था भावं से किये इस छोटे से दान ने विपत्ति में द्रोपदी के लिए साड़ीयों का ढेर लगा दिया दुशासन खींच खींचकर थक ग

जोगु पचाए जोगी थियड़ा मन इन्दियुनि खे जीते, कहे टेऊँ कनि आश न कहिंजी जग खां रहनि न्यारा

नाम सुमरण मे स्थायी व अनूठा आनंद है जो केवल अपने लिए जीता है उनका जीना व्यर्थ है। पर उपकार स्मरण स धर्म का धन इकट्ठा किया हुआ आगे काम आवेगा ।

समय का अति कदर करना खोइये न कुसंग मे। जो बचे व्यवहार से सो सफल कर सत्संग में । महापुरूष करनी करते हैं । कथनी अनुसार उपकार का मानना कृतज्ञता कहलाता है परन्तु जो ईश्वर सन्त गुरू माता–पिता उपकार किया हुआ न माने वह कृतघ्न कहलाता है। सन्तो के जीवन की और भी गुणों की व्याख्या करते सत्संग पूर्ण किय

कार्तिकोत्सव में जन सैलाब उमड़ा

जय टेऊँरामा -दर्श दिखाना

कार्तिक मास एक ऐसा मास है जिसमें मनुष्य ने गर चाहे कितने भी पाप कर्म किऐ हों , मगर वो चाहे ो कार्तिक मास में क्षण भर श्वर का नाम जपे तो इस न्मों के पापों से छुटकारा ा मिल ही जाता है, साथ ही रोड़ो जन्मों के पाप भी छूट ाते हैं और उस मनुष्य का कुण्ठ में वास होता है ।

भगवान श्री विष्णु ार्तिक कथा का महात्म बताते ऐ कहते हैं, कि अगर कोई नुष्य कार्तिक के दिनों में त:काल उठकर नित्यकर्म से



वृत्त होकर भगवान का नाम जपे व अपनी सामर्थ्य के नुसार दान करे । कार्तिक में तुलसी जी के वृक्ष में ावान विष्णु का वास होता है, तुलसी माता की पूजा र्चना करनी चाहिऐ, जो व्यक्ति इस मास में श्रद्धापूर्वक ावान की भक्ति करता है उसे इस जन्मों व कई जन्मों पापों से मुक्ति मिल जाती है ।

ऐसे पुण्यकारी मास को भला श्री दरबार की भूमि कैसे नहीं मनाया जाता ऐसे दिव्य मास की शुरूआत अक्टूबर सोमवार से हुई । आज तो इस पुण्यकारी वस की महानता और भी ज्यादा बढ़ गई क्योंकि श्री प्रकाश पन्थ के मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरू स्वामी त प्रकाश जी महाराज अपने सानिध्य से कृतार्थ कर थे ।

महाराज श्री व अन्य सन्तगणो की अध्यक्षता में श्री प्रकाश ग्रन्थ, कार्तिक कथा व गीता के पाठ साहब गऐ और अगले दिन होने वाली प्रभात फेरी की ना प्रेमीयों को दे दी गई ।

28 अक्टूबर : आज तो जयपुर शहर के प्रेमीगण दरबार में होने वाली प्रभात फेरी के लिऐ ब्रह्मवेला मे यस्त हो गऐ थे। श्री दरबार का सम्पूर्ण परिसर प्रात: काल की दिव्यकारी आभा से आलोकित हो राह था, प्रेमीगण प्रभात वेला में श्री दरबार की धरा–धाम पर आ रहे थे। कुछ प्रेमीगण श्री मंदिर व सद्गुरू महाराज जी के दर्शन में व्यस्त थे।

जैसे ही घड़ी ने 6,00 बजाऐ एक पूर्व सुसज्जित चौपहिया वाहन सन्त श्री के समीप आकर खड़ा हुआ । चौपहिया वाहन जिसकी चारों दिशायें विभिन्न रंग–बिरंगी झालरों पताकाओं व मोतियों से सुशोभयमान हो रही थी। रंग –बिरंगी लाइटों व पुष्पों से इस दिव्यकारी चौपहिया वाहन की आभा और ज्यादा बढ़ गई ।

चौपहिया वाहन के अग्र भाग व पृष्ठ भाग में ध्वनि विस्तारक यन्त्र लगाऐ गऐ। इस सुशोभित रथ के मध्य भाग में विराजित की गई हमारे सबसे प्यारे , संकट हरने वाले "दण्डे वारे" की चिन्ताकर्षक संगमरमर की प्रतिमा इस प्रतिमा की आभा और ज्यादा बढ़ गई जब सन्त श्री ने महाराज श्री की प्रतिमा पर पुष्पों की माला चढाई । प्रतिमा की दिव्य मुस्कान और ज्यादा आकर्षित लग रही थी । रथ के अग्र भाग में विशाल हैरिजन लाइट भी लगाई गई थी ।

अरे ये क्या ! सम्पूर्ण प्रेमी तो रथ के चारों ओर एकत्रित हो चुके हैं । रथ के अग्र भाग में प्रेमीगण व उनके साथ सन्तगण व अमरापुर के विद्यार्थी हाथ मे ढोलक, झांझ लिऐ प्रभात फेरी के शुरू होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, वहीं रथ के पीछे माताऐ बहने प्रेमातुर होकर मधुर धुनि का उच्चारण करने के लिऐ लालयित हो रही है बस सन्त श्री की आज्ञा मिलने का इन्तजार हो रहा था । सन्त श्री मोनूराम जी ने अपने हाथ मे माइक लेकर जैसे ही "सतनाम साक्षी" धुनि का उच्चारण किया तो प्रेमी ऊँचे स्वर में 'सतनाम साक्षी' का गुणगान करने

लगे ।

"धन गुरू टेऊँराम–सारा जगतारिया" की धुनि शुरू होकर गुरूमुख द्वार पर आई और इसके साथ ही पहली परिक्रमा शुरू हुई । इतना सुसज्जित चौपहिया वाहन के चारों और मधुर संकीर्तन के लिऐ लालायित होते प्रेमीगण सन्त श्री के श्री मुख से मधुर धुनि के उच्चारण सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे ।

भई गजब की बासुंरी तो बजती थी वृन्दावन बसैईया
की करूं तारीफ उस मुरलीधर बजईया की
चलता न था जोर जहाँ वज्र की तीर और तलवारों से
विजय होती थी, जहां नटवर की तानों से

के दोहों का उच्चारण किया तो प्रेमीगण हाथों से करतल करते हुऐं " राधे–राधे–गोविन्द गोविन्द राधे" का मधुर संकीर्तन उच्चारित करने लगे, ध्वनि विस्तारक यन्त्रो के कारण ये ध्वनि और भी ज्यादा तीव्र सुनाई दे रही थी। पीछे–पीछे प्रेमी हाथों से करतल करते हुऐ प्रेम रस के पान में डूबे चले आ रहे थे । आज प्रेमीगण पूरे एक साल की प्रतीक्षा के बाद इस दिव्यकारी प्रभात फेरी के दर्शन की मधुर अनुभूति का अहसास कर रहे थे । न जाने कब ये प्रेम व नाम से युक्त काफिला गौशाला के निकट आकर पहुंचा । फिर सन्तों ने अपनी तर्जनी को ऊपर उठांकर शिवोऽम का तीन बार उच्चारण किया और मधुर धुनि के स्वर को विराम दिया।



फिर सन्तगणों ने गौशाला के निकट पहुंचकर गाय के रखपाल "भगवान श्री कृष्ण " की मधुर धुनि उच्चारित करते हुए " जय–जय राधा रमण हरि बोल "का स्वर उच्चारित किया तो प्रेमीगण पुनः जोर–शोर के साथ मधुर धुनि का उच्चारण करने लगे । इतनी मधुरकारी धुनि को सुनकर गौ माताऐं भी कृष्ण की भक्ति में मस्त हो गईं । श्री नन्दलाल जी मोरपंखधारी श्री कृष्ण के गुणगान गाते–गाते प्रेमीगण दरबार के पृष्ठ भाग में स्थित विशाल परिसर में एकत्रित हुऐ ।

[illegible] में पहुंचकर प्रेमीयों का विशाल काफिला [illegible] पाकर फैल गया और स्वामी जी की महानता के दोहे सुनने के लिऐ लालायित हो उठा । वे जानते थे कि सन्तगण हमेशा की भांति यहां आकर स्वामी जी की महिमा के दोहें सुनाकर प्रेमीयों को अत्यधिक मस्त बनाते हैं । फिर जैसे ही सन्त श्री ने –

वृन्दावन में श्याम है , अयोध्या में श्री राम
अमरापुर माहि बसे, सदगुरू टेऊंराम

का दोहा गाया और " 1–2–3–4 स्वामी जी की जयजयकार " का मधुर संकीर्तन उच्चारित किया तो प्रेमीगण भंवरे के समान चातक बनकर नाम का गुणगान करने के लिए प्रेम के प्रवाह में बहकर हाथों से ऊँचे स्वर में करतल व पैरों से नृत्य करने लगे । नृत्य करते व स्वामी जी का गुणगान करते हुऐ ये काफिला महाराज श्री के कक्ष के समीप आकर रूका फिर पुनः सन्त श्री ने शिवोऽम का उच्चारण करके मधुर धुनियों को विराम दिया। महाराज श्री के कक्ष के समीप आकर सन्त श्री ने प्रेम प्रकाशियों के महान मंत्र "सतनाम साक्षी" का जैसे ही गुणगान किया तो प्रेमीयों का हृदय प्रेमानन्द की उड़ान भरने लगा । "सतनाम साक्षी सदा बोल प्यारा" का मधुर संकीर्तन सम्पूर्ण श्री दरबार में उच्चारित होने लगा ।

लगभग 25 मिनट हो चुके थे इस फेरी को शुरू हुऐ । तथा प्रेमीयों का समूह पूर्व से दुगना हो चुका था। पर प्रेमीयों का जोश चौगुना ही लग रहा था । प्रेमीगण अत्यधिक उत्साह से ओत–प्रोत लग रहे थे । सतनाम साक्षी महामंत्र व सन्तों का सानिध्य पाकर यह फेरी भण्डार गृह के निकट पहुंचकर रूकी । भण्डार के निकट पहुंचकर सामने स्थित अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर के दर्शन की अनुभूति हो रही थी, तभी सन्त श्री ने प्रेमियों के हृदय की बात को जानकर "भोले बाबा" की मधुर धुनि "हरि ओम नमो शिवाय –सदा शिव हरि ओम नमो शिवाय " लगाकर भोले बाबा का गुणगान शुरू किया तो प्रेमी भी कहां पीछे रहने वाले थे । वो भी अत्यधिक उमंग से भोले बाबा का गुणगान करने लगे । धीरे–धीरे प्रेमीयों का यह झुण्ड गुरूमुख द्वार पर आकर रूका तो घड़ी की सूईया लगभग 6.35 बजे

चुकी थीं ।

समय को ध्यान में रखते हुए अंतिम दो फेरी लगभग 7:10 बजे तक समाप्त की गई और फिर प्रेमियों का काफिला धीरे–धीरे गुरुमुख द्वार की सीढ़िया चढ़कर संत्सग परिसर पहुंचा ।

सत्संग मंच के मध्य में एक प्रकोष्ठ बनाया गया था जिसके चारों ओर मनोहरकारी सजावट से इसकी सुंदरता का कोई पार नहीं था । जिसमें हमारे प्रेम प्रकाश पन्थ के इष्टदेव व महान मण्डलेश्वरों की मनमोहित प्रतिमाऐं विराजित की गई थीं । श्री दरबार के भीतरी भाग व समाधि स्थल एवं श्री मन्दिर की आभा भी आज कम नहीं थी ।

आज सम्पूर्ण सत्संग परिसर उत्साहित प्रेमियों से व सत्संग मंच सन्तगणों से शोभा पा रहा था, बस इन्तजार था तो सन्त श्री की ओजस्वी वाणी में मधुर धुनि के शुरू होने का। ऊँचे स्वर में ढोलक व शहनाई वादन तेज हो रहा था । सन्त श्री ने –

मंगलमय गुरू रूप है, मंगलमय गुरू धाम
मंगलमय गुरू नाम है, धन गुरू टेऊँराम

आचार्य श्री का इतना मधुर संकीर्तन उत्साहित प्रेमियों के जोश को बढ़ाने के लिऐ काफी था । सन्त श्री ने ''टेऊँराम बाबा किसका है '' का घोष किया तो प्रेमियों का हृदय अधीर होकर अपने बाबा को अपना बनाने के लिऐ छटपटाने लगा और ऊँचे स्वर में बोल उठे। ''तेरा नहीं वो मेरा है टेऊँराम बाबा मेरा है '' पर फिर पुनः सन्त श्री बोलते ''तेरा नहीं वो मेरा है – टेऊँराम बाबा मेरा है '' पर प्रेमी भी कहां पीछे रहने वाले थे वो तो और अधिक जोश अधिक उत्साह से बोलते ''तेरा नहीं वो मेरा है टेऊँराम बाबा मेरा है '' प्रेमीगण ऊँचे स्वर से करतल व पैरों से नृत्य करते हुऐ बाबा को अपना बनाने के लिऐ रूकने वाले नहीं थे । आखिरकार जब सन्त श्री ने कहा ''अच्छा बाबा सबका है '' तो प्रेमी अपने बाबा को अपना बनाकर ही शान्त हुऐ। और फिर पुनः शुरू हुआ मधुर दोहों का स्वर –

चलो सखी वहां जाइये
,जहां बसे ब्रजराज
माखन बेचन हरि मिले तो
एक पन्थ दो काज

दोहे के बाद शुरू हुआ ''हरि बोल–हरि बोल'' की मधुर धुनि का सिलसिला, प्रेमीगण पैरों से नृत्य करते हुऐ बोल पड़े ''हरि बोल–हरि बोल'' प्रेमी हरिनाम में इतने व्यस्त हो गऐ कि उन्हे तो समय का न भान था और न ही अपनी थकान का । आखिरकार सन्तगणों ने समय को ध्यान में रखते हुऐ अन्तिम दोहें का उच्चारण किया –

सदगुरू टेऊँराम का, अमरापुर स्थान
सतनाम साक्षी मंत्र का, बैठ करो गुणगान

और फिर प्रेम प्रकाशियों के महान मंत्र ''सतनाम साक्षी'' का गुणगान शुरू हुआ । सब प्रेमी आँखें मूंदकर हृदय में सतनाम साक्षी मंत्र की महानता समझते सतनाम साक्षी मंत्र का 108 बार जाप करने लगे । 108 बाए जाप करने के पश्चात घड़ी ने लगभग 7.30 बजा दिये थे । फिर सन्त श्री ने अपनी तर्जनी को उठाकर शिवोऽम का उच्चारण करके प्रथम दिन की प्रभात फेरी की समाप्ति की । अगले दिन प्रेमीगण अधिक संख्या में श्री दरबार आऐ।

30 अक्टूबर आज गुरूवार के कारण पूर्व दिन की अपेक्षा अधिक संख्या में आऐ और सन्त श्री ने एक नवीन धुनि

आज तो आनन्द भयो जय गुरू सर्वानन्द होयो

का उच्चारण किया । इसी तरह हर रोज प्रेमी श्री दरबार में आकर कार्तिक मास के महान दिनों में हरि का गुणगान करते हुऐ अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे थे ।

इसी बीच 1 नवम्बर शनिवार गोपाष्टमी के दिन श्री दरबार की गौ–शाला में आकर्षक ढंग से पुष्पों व लताओं से सजावट कर भगवान श्री कृष्ण के लीलाओं की मूर्तियां लगाई गयी थीं । और सांयकालीन 4 बजे सभी सन्तों व प्रेमियों ने मिलकर गौमाता की पूजा अर्चना की । 2 नवम्बर आंवला नवमी के दिन श्री दरबार के बाहरी परिसर में स्थित आंवले के वृक्ष के नीचे बैठकर

खास बातें

1. कई कालोनियों के प्रेमीगण पदयात्रा करके श्री दरबार आऐ ।
2. एकादशी के दिन बालक कृष्ण व ग्वालों की वेशभूषा पहनकर श्री दरबार आऐ ।
3. शनिवार गोपष्टमी के दिन ''हरे राम कला–कीर्तन '' के संतो ने '' बिगड़ी मेरी बना दे '' तथा ''स्वामी टेऊंराम ''के भजनों की मौज मचाई ।
4. प्रेमियों की सुविधा के लिऐ कई कालोनियों से निः शुल्क बसों की सुविधा उपलब्ध कराई गई ।

सन्तो ने पूजा की और वही प्रसाद ग्रहण किया तथा सन्तगणो ने प्रेमियों को "गलता जी " चलने के लिऐ कहा। ये तो हम सब भी जानते हैं कि कार्तिक मास में तीर्थो का बड़ा महत्व होता है । 4 नवम्बर आज एकादशी के महान पवित्र दिन श्री दरबार में छोटे–छोटे बालक गण "भगवान श्री कृष्ण की वेशभूषा धारण करके चारों और भगवान की झलकों का आभास करा रहे थे । हर रोज प्रेमीयों की संख्या बढती ही जा रही थी । इसका अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है । कि आगे आगे चलने वाले प्रेमीयों के अन्त तक माताऐं व बहनें चल रही थीं ।

जयपुर शहर के प्रेमीगण कार्तिक मास के बाकी बचे ये पांच दिन नहीं गवांना चाहते थे । वे शहर के कौने–कौने से झुण्ड बनाकर श्री दरबार में आकर अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे थें । धीरे–धीरे हरि रस का पान करते हुऐ आखिरी दिन शनिवार कार्तिक पूर्णिमा का आ ही गया । और आज प्रेमियों के उत्साह–खुशी का तो कहना ही क्या । आज तो हमारे बीच स्वंय हमारे मालिक प्रेमस्वरूप सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज उपस्थित होकर कार्तिकोत्सव की सुंदरता को चारचांद लगाते हुए सम्पूर्णता प्रदान कर रहे थे ।

आज तो प्रेमी 5.30 बजे से ही आकर श्री दरबार में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थें । प्रातःकालीन 6.00 बजे पूर्व नियोजित प्रभात फेरी शुरू हुई, पर आज तो प्रेमीयों का उत्साह अधिक लग रहा था क्योंकि आज से इस दुर्लभकारी प्रभात फेरी का उन्हे दर्शन दुबारा एक साल की प्रतीक्षा के बाद होने वाला था । आखिरकार प्रथम फेरी शुरू हुई और प्रेमी हरि का गुणगान करते हुऐ आगे बढ़ रहे थे । जगह–जगह प्रेमीयों का काफिला रूककर हरि का गुणगान करते हुऐ नृत्य में तल्लीन थे । आगे चौपहिया के निकट छोटे–छोटे सन्त व सन्तगण अपने कर कमलों को ऊपर उठाकर नृत्य कर रहे थे कितना न मनोहरकारी दृश्य लग रहा था । कैमरामैंन व मूवीमैन इन दुर्लभ दृश्यों को कैद करने में व्यस्त हो रहे थें । क्या माताऐं –क्या बहनें सभी अपनी सुधबुध भूलकर तन्मय होकर हरि गुणगान व नृत्य में मस्त थें । श्री दरबार के सम्पूर्ण चारों कोने प्रेमियों से भरे हुऐ थे । साथ–साथ श्री दरबार का बाहरी भाग वाहनों की रेलमपेल से भरा हुआ था । समय के साथ श्रद्धालुओं की संख्या ने एक विशालकाय रूप ग्रहण कर लिया । सेवादारी अनगिनत भीड़ को संभालने में बेकाबू होने लगे तो उन्होनें प्रेमीयों के काफिले को सत्संग हाल में भेजना शुरू किया । बड़ी कठिनाई से 7.15 तक तीन परिक्रमा पूरी हुई । भगवान दिवाकर की प्रातःकालीन दिव्य मुस्कान श्री दरबार के सम्पूर्ण परिसर में बिखर रही थी । सत्संग मंच पर पहुंचकर हर दिनों की तरह धुनियों का सिलसिला शुरू हुआ तों प्रेमी इतना डूब गऐ कि वह इस सिलसिले से बाहर नहीं निकलना चाहते थे घड़ी की सुई ने 7.30 बजाऐ पर प्रेमी तो हरि रस के अनुराग में नृत्य करने लगे। आखिरकार 7.40 तक सतनाम साक्षी मंत्र का जाप जपकर शिवोऽम का उच्चारण करने के लिऐ तर्जनी को ऊपर उठाया तो प्रेमीयों का हृदय छटपटाने लगा । वह इस दुर्लभ क्षणों को समाप्त नही करना चाहते थे । हम तो जड़वत् होकर रह गऐ । इतना मधुरकारी क्षण का आभास तो उपस्थित होने वाले को ही हो सकता है लेखनी के बस की बात नहीं । आखिर कार बेमन से इस फेरी की समाप्ति पर सत्संग गंगा की शुरूआत हुई प्रार्थना के पश्चात् सन्तो ने पाठ साहब का भोग डाला और सन्तो ने सत्संग की शुरूआत की –

स्वामी टेऊरांम सुजानी थे – ज्ञानी दानी ध्यानी थे

पुज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज ने अपनी मृदल व औजस्वी वाणी में आचार्य जी की शिक्षा के बारे में बताते हुऐ कहा कि हम स्वामी जी की शिक्षा पर चलकर सत्य के मार्ग का अनुसरण करें तो हमें परमात्मा की प्राप्ति होगी और सांसारिक बंधनो से मुक्ति प्राप्त होगी । हमें सांसारिक बंधनो में नही बंधकर सत्संग की तरफ ध्यान लगाना चाहिऐ।

सत्संग की समाप्ति के पश्चात् आम भण्ड़ारा हुआ जिसमें प्रेमियो ने सश्रद्धा प्रसाद ग्रहण किया ।

प्रभात फेरी में उच्चारित दोहे

1. मंगलमय गुरू रूप है , मंगलमय गुरू धाम
   मंगलमय गुरूनाम है , धन गुरू टेऊँराम
2. ब्रज मण्ड़ल सम रास है परम मनोहर जान
   वृन्दावन समधाम है , अमरापुर स्थान
3. वृन्दावन में श्याम है, अयोध्या में श्री राम
   अमरापुर मांहि बसे , सदगुरू टेऊँराम
4. सद्गुरू टेऊँराम का , अमरापुर स्थान
   सतनाम साक्षी मंत्र का करो यहां गुणगान
5. सदगुरू टेऊँराम की महिमा कही न जाऐ
   कठिन समय में होत है सर्वानन्द सहाय
6. चलो सखी वहां जाइये , जहां बसे ब्रजराज
   माखन बेचन हरि मिले तो एक पन्थ दो काज

7. भई ! गजब की बांसुरी तो बजती थी वृन्दावन बसईया की
करूं तारीफ क्या उस मुरलीधर बजईया की
चलता न था जोर जहां वज्र की तीर और तलवारों से
विजय होती थी जहां नटवर की तानों से

संकीर्तन में उच्चारित धुनियाँ

1. जय टेऊँरामा दर्श दिखाना ,
अमरापुर बसिया रे , मेरे मन बसिया रे
2. चलते चलो–चलते चलो, सतनाम साक्षी कहते चलो
3 स्वामी टेऊँराम –दर्श मोहे दिना
दर्श मोहे दिना , दर्श मोहे दिना
4. श्री मन नारायण – नारायण हरि–हरि
5. भज गोविन्दम् , बाल मुकुन्दम् सर्वानन्दम् हरे–हरे
6. एक दो तीन चार स्वामी जी की जयजयकार
7. झूले–झूले–झूले , झूलेलाल आयो लाल
8. टेऊँराम बाबा मेरा है तेरा नहीं वो मेरा है
9. राधे–राधे गोविन्द –गोविन्द राधे
10. मन मोह लिया–मुरली वाले ने
11. गोविन्द बोलो–हरि गोपाल बोलो
12. सत्‌नाम साक्षी –सदा बोल प्यारा
सदा बोल प्यारा –मुख खोल प्यारा
13. आज तो आनन्द भयो जय गुरू सर्वानन्द होयो ।

गुड़िया प्रेम प्रकाशी (जयपुर से)

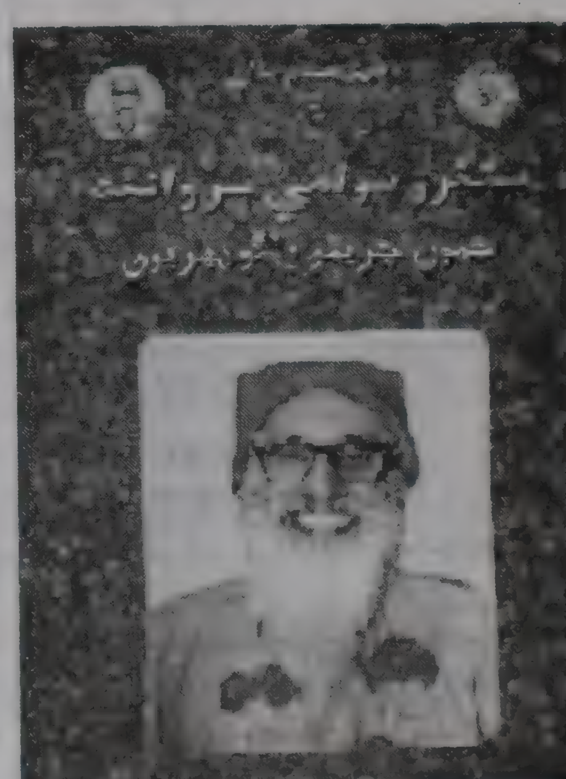
इसी प्रकार कार्तिकोत्सव का इस पवित्रतम मास में समस्त भूमण्डल के साथ साथ प्रेम प्रकाशी जगत में भी आनन्दातिरेक रहा अनेक स्थानों से पवित्र कार्तिक मास के उपलक्ष में विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये । कामठी (नागपुर) से प्राप्त समाचार के अनुसार 26 अक्टूबर से 8 नवबंर तक प्रतिदिन प्रातः 5 बजे स्वामी शान्ति प्रकाश मंदिर द्वारा भव्य प्रभात फेरी में हरिनाम संकीर्तन की मौज में हजारों प्रेमी सम्मिलित होते रहे । ग्वालियर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में 10 अक्टूबर से 8 नवम्बर तक कार्तिकोत्सव में प्रातः 5 बजे से कार्तिक कथा का आयोजन किया गया । इसमें भजन–कीर्तन –प्रवचन की शीतलता से परिपूर्ण पावन अमृतमयी मौज में सैकड़ों की संख्या में प्रेमी लाभान्वित हुए , हरि प्रबोधिनी एकादशी 4 नवम्बर को रात्रि जागरण के अन्तर्गत भजन कीर्तन की धूम रही, 6 नवम्बर को हजारों प्रेमियों ने प्रभात फेरी में हरिनाम गायन के साथ परिकमा मार्ग को पावन किया ।

–कार्यालय डेस्क

पुस्तक समीक्षा नवीन संस्करण मूल्य 25रूपए

सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज जीवन चरित्र भाग प्रथम (अरबी लिपि)

महर्षि सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जीवन चरितामृत भाग प्रथम सिंधी अरबी लिपि में नवीन संस्करण छपकर तैयार है। महाराज श्री के जीवन से संबंधित सभी विवरण इस पुस्तक में दर्शाए गए हैं। बड़े ही सुन्दर आवरण एवं मोटी जिल्द के साथ लेजर टाइप में सजा कर पुस्तक उपलब्ध है। पुस्तक का मूल्य मात्र पच्चीस रूपए रखा गया है। प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान के जयपुर के अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है ।



शीतकालीन समय सारणी

ॐश्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान (मन्दिर) की दैनिक समय सारणी

मन्दिर खुलने का समय	प्रतिदिन सत्संग का समय
सुबह : 6.00 बजे से 12.00 बजे तक सांय : 3.00 बजे से 8.30 बजे तक	सुबह : 7.00 बजे से 8.20 बजे तक सांय : 4.00 बजे से 5.30 बजे तक

प्रत्येक रविवार	आरती
सुबह : 7.00 बजे से 9.30 बजे तक (सत्संग–प्रवचन कैसैट) सांय : 4 बजे से 5.30 बजे तक (सत्संग–भजन)	सायं 5.30 से 5.50 बजे तक

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार
सुबहः 7.00 बजे से 8.30 बजे तक (सत्संग–गुरुप्रार्थनाष्टक पाठ) सांय 4.30 बजे से 6.:00 बजे तक (भजन संध्या–आरती–सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप)

विशेष " पूज्य महाराज श्री " के पावन अवतरण दिवस शनिवार व गुरूवार को प्रात : 8 बजे गुरु प्रार्थनाष्टक सायं 6 बजे महामंत्र सत्नाम साक्षी का संकीर्तन व समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी

श्री प्रेम प्रकाश मंदिर, खार (मुम्बई)

सत्संग — समागम

1 जनवरी से 5 जनवरी 2004 तक

कार्यक्रम

1 जनवरी — प्रातः सत्संग, हवन, श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन

1 से 5 जनवरी

प्रतिदिन प्रातः	प्रतिदिन सांय
8 बजे से 10 बजे तक सत्संग (प्रेम प्रकाश मंदिर खार मुंबई में)	6.00 बजे से 8.00 बजे तक सत्संग (लोकहित कुटीर, रोड नं. 16, खार (वेस्ट) में)

पताः प्रेम प्रकाश मंदिर, प्रेम सागर रोड न. १९, खार (वेस्ट) मुंबई

फोन : 022 — **26057579, 26057711**

देशाटन

यात्रा वर्णन

पूज्यपाद् सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज व संत मण्डली

का हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र के विभिन्न भागों में भव्य स्वागत

सत्संगानन्द से प्रेमी हुए भाव-विभोर

उज्जैन में कुम्भ मेला छावनी की व्यवस्थाओं के लिए अवलोकन

सिंध (पाकिस्तान) पहुंचने पर जोरदार स्वागत

अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद् आचार्य श्री सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की धर्मपीठ के पंचम ोठाधिपति श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरूवर वामी भगत प्रकाश जी महाराज कोटा यात्रा के पश्चात् ारीख 4 अक्टूबर से 7 नवम्बर 2003 तक महाराष्ट्र, रियाणा, कर्नाटक के अनेक भागों में सत्संगामृत की ानगंगा का हजारों प्रेमियों ने अमृत चखा । इस खनी के माध्यम से पूज्य गुरू महाराजजी के साथ शाटन में सम्मिलित होकर हम भी सुखानुभूति प्राप्त रें।

मुंबई (4–5 अक्टूबर 2003)

सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के 107 वें न्मोत्सव का कोटावासियों को परमानन्द में विचरण राते हुए पूज्य स्वामीजी संत मंडली सहित 4 अक्टूबर ो देर शाम मुंबई पहुंचे। खार डांडा रोड स्थित प्रेम काश मंदिर में पूज्य स्वामीजी का प्रवास रहा, माहीम थत प्रेम प्रकाश आश्रम के पुर्ननिर्माण कार्यों का भी ज्य महाराज श्री ने अवलोकन कर आवश्यक निर्देश भी वाधारियों को दिये। खार आश्रम पर आयोजित सत्संग मारोह का मुम्बई वासियों ने पूरा पूरा लाभ लिया।

पिनगंवा (हरियाणा) 7–8 अक्टूबर 2003

मुम्बई से रेलमार्ग द्वारा दिल्ली पहुंचकर, यहां से ड़क मार्ग द्वारा प्रेमरस से परिपूर्ण छोटी सी नगरी नगंवा पूज्य स्वामी जी संत मण्डली सहित पहुंचे, जहां र नगर प्रवेश द्वार पर पहिले से ही उपस्थित प्रेमी श्री द प्रकाश जी के साथ बड़ी संख्या में स्वामी जी के र्शनार्थ स्वागतार्थ उपस्थिति थे। जैसे ही स्वामी जी के र्शन हुए, पिनगंवा के साथ हरियाणा के अलग अलग त्रों से आये प्रेमी प्रेमरस की अधिकता में आकर भावुक होकर नीर बहाने लगे । सुधि आते ही जयघोष से गगन मण्डल गुंजित कर दिया। पुष्पवर्षा के साथ हरि नाम संकीर्तन करते पूज्य महाराज जी व संत मंडली को एक छोटी शोभायात्रा के रूप में प्रवास स्थल लाया गया । प्रातः रात्री सत्संग समारोह में पिनगंवा वासियों ने बढ चढ़ कर भाग लेते हुए अपने मानव जीवन को कृतार्थ किया। ज्ञातव्य हो कि पूरे हरियाणा क्षेत्र में सद्‌गुरू महाराज जी के प्रेमी पंजाबी व बहावलपुरी सिन्धी पंजाबी है, जिनके प्रेम की गाथा अकथनीय है।

हथीन (9–10 अक्टूबर 2003)

दिनांक 9 अक्टूबर 2003 को प्रातः काल स्वामीजी संत मंडली सहित पिनगंवा से पुनहाना होते हुए 10 बजे हथीन श्रीप्रेमप्रकाश मंदिर में पधारे। सभी प्रेमी सांई के आने की तैयारी में संलग्न थे। स्वामी जी ने पूरे 10 बजे मंदिर में प्रवेश किया और पूरा मंदिर जयकारों की ध्वनि से गूंज उठा। सभी प्रेमी वहाँ पर दर्शनों के लिए विद्यमान थे। और सभी सेवादारियों ने (श्री नाथ बतरा, श्री गिरधारी लाल कालरा, श्री शंकरलाल जी सहित स्वामी जी को फूल मालाएं पहिना कर अभिनंदन किया। स्वामी जी के आने की खुशी में सभी प्रेमी खुशी से झूम रहे थे। आज प्रातः यहाँ पर हवन ध्वजारोहण का आयोजन भी बड़े हर्षोल्लास के साथ स्वामीजी की अध्यक्षता मे किया गया। हवन ध्वजारोहण के समय स्वामी जी ने आचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के महिमा के कुछ श्लोकों का गुणगान किया तथा ध्वजारोहण के समय "हम गीत सनातन गायेंगे, नित झंडा धर्म झुलायेंगे " और "स्वामी टेऊँराम तुहिंजो झण्डो झूले।" भजन गाकर आरती गायन किया गया तत्पश्चात् स्वामी जी ने पल्लव पाकर सब प्रेमियों को आशीर्वाद दिया तत्पश्चात् भण्डारे का

आयोजन किया गया।

9 अक्टूबर 2003 सांयकाल 6:30 बजे से 7:00 बजे तक आरतियों का गायन हुआ और 7:00 बजे से 7:30 बजे तक कुछ माताओं ने भजन गाए, 7:45 से 8:00 तक भगत मूलचंद जी ने सत्संग किया तथा 8 से 8:15 तक संत संजय प्रेम प्रकाशी ने भजन गाया तत्पश्चात 8:15 से 8:30 बजे तक संत जयदेव जी ने सत्संग किया, इसके वाद 8:30 बजे से 9:00 बजे तक स्वामी जी ने सत्संग किया। आज बहुत ही शुभ दिन था क्योंकि आज ही के दिन (गुरूवार) के दिन पूजनीय सत्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज इस धरती पर सोये हुए जीवों का उद्धार करने के लिए इस धरती पर अवतार लेकर आए। हथीन में भी सद्‌गुरू सर्वानन्द जी महाराज का जन्म उत्सव मनाया गया । पूरे मंदिर की सजावट की गई। तथा 107 दीपक भी जलाए गए एवं केक काटकर स्वामी जी ने सद्‌गुरू महाराज जी के जन्म उत्सव की सबको बधाई दी। संत श्री मुक्त जी ने वाधायूं वाधायूं लख–लख वाधायूं भजन गाया तथा स्वामी जी ने आज खुशी का दिन आया भजन गाया । सभी प्रेमी खुशी से नाच उठे। पूरा मंदिर प्रेमियों से खचा खच भरा हुआ था और सभी ने शांतिपूर्वक स्वामी जी के सत्संग का आनन्द लिया ।

पलवल (11से 13 अक्टूबर 2003)

माता चतरीबाई का वार्षिक उत्सव

हरियाणा यात्रा के अंतिम पड़ाव पलवल के काफी प्रेमी पिनगंवा यात्रा से ही पूज्य स्वामी जी के साथ थे और अब जबकि पूज्य महाराज जी उन्ही के साथ उन्ही के नगर को पावन करने हेतु पधारे तो स्वाभाविक रूप से प्रेमियों की प्रसन्नता को सहज ही अनुभव किया जा सकता है। प्रेम रस से सुगंधित पुष्प मालाओं के अर्पण के साथ पलवल, फरीदाबाद वासियों ने मिलकर पूज्य महाराज श्री व संत मंडली का भावभीना स्वागत किया। पिछले वर्ष से यहां पर पूज्य माता चतरीबाई का वार्षिक वरसी उत्सव मनाया जाता है जिसमें फरीदाबाद ,पलवल हिसार ,पिनगंवा ,हथीन ,गुडगांव ,दिल्ली ,इत्यादि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में प्रेमी पहुंचकर पूज्य स्वामीजी के दर्शन सत्संग का लाभ प्राप्त करते हैं इस वर्ष भी बड़े हर्षोल्लास के साथ पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में माता चतरीबाई का वरसी उत्सव मनाया गया । जिसके अंतर्गत 12 अक्टूबर को हवन व ध्वजावंदन, आम भंडारे का कार्यक्रम संपन्न हुआ। 13 अक्टूबर को रात्रि में सत्संग समाप्ति के पश्चात पल्लव पाकर मेले को संपूर्णता दी गई। संत जयदेव जी ,संत श्री मुक्त ,संत संजय ,भक्त मूलचंदजी भी इस यात्रा में पूज्य स्वामी जी के साथ थे ।

शोलापुर (16से 17 अक्टूबर 2003)

पंढरपुर दर्शन

हरियाणा यात्रा पूरी कर 14 अक्टूबर से दिल्ली वासियों को दर्शन सत्संग से सराबोर करते हुए रेल मार्ग द्वारा 15 अक्टूबर को रात्री मध्य शोलापुर स्टेशन पर पधारे। अपार जनसमूह जयघोष की ध्वनी के साथ फूलमालांए पहनाते व फूलों की वरखा करते हुए श्री गुरूनानक नगर में पधारे जहां पर श्री गुरू महाराज के प्रेमी श्रीचंद जी, मुरलीधर, भजनलाल भाइयौं के निवास पर प्रवास किया। 16 अक्टूबर सांयः 5:30 बजे शोभायात्रा निकाली गई जिसमें श्री गुरू महाराजजी को फूलों से सजे रथ में बैठाकर जयघोष के मधुर झंकार करते हुए बैंड बाजों के साथ पूरे नगर में परिक्रमा देकर नाचते गाते सत्संग मंडप में ले आए व सारे प्रेमी सत्संग का आनन्द लेकर भाव विभोर होकर गद्‌गद्‌ हुए। प्रथम श्री संत संजय कुमार ने आचार्य सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज की महिमा गीत गाया तत्पश्चात्‌ संत श्रीमुक्त ने भी अपने हृदय भाव से मधुर गीतों का आनन्द सारी संगति को दिया, हांगकांग से पधारे संत श्री नामदेव जी भी जिन्होने सन्त समागम भगवत्‌ कृपा विषय पर प्रेमियों को बताया,

सन्त गुरू परमात्मा सांचे संगी जान
कहे टेऊँ इन तीन से करिले प्रेम सुजान

सन्तो के साथ जो घड़िया बीतीं वह जीवन में एक याद की घड़ी होती है जिससे जीवन सुधर व संवर जाता है तत्पश्चात्‌ सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने ही मन को शिक्षित करने हेतु निम्नांकित दोहा भजन से सत्संग आरम्भ किया ।

कहे टेऊँ मन चेतले अब कुछ बिगड़ी नाहिं
दया धर्म शुभ कर्म कर हरि स्मरो मन मांहि।

समझण जी हीअ महिल अथेई , समुझी वठ करि सफली देही
भलो तुहिंजो मां चाहियां, मनड़ा तोखे आऊं समझांया ।

आचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी

वाणी में फरमाते हैं कि जीवन अमोलक थोड़ा है इसमें करने योग्य कार्य हम करें, मनुष्य धर्म का आचरण करें ।

या तो आत्म ज्ञान हो या हो पर उपकार
टेऊँ जिसमें ये नही मानुष सो बेकार
मानुषा तो हरि भजन भाया
तो कुछ दान जोबन तो शीलवन्त कबीर जाया
सो परवान मिला मानुष जनम तुमको हरि के भजन हित प्यारा,

मानव जीवन धारण करने के बाद मृत्युकाल होने से पहले जिसमें अपने आप को जान लिया, भजन के द्वारा उनका जीवन ही सार्थक हो जाता है। द्वितीय दिवस पर प्रातः श्री गुरू महाराज सन्त मण्डली सहित पंढरपुर जो कि शोलापुर से 48 किलो मीटर दूर है जहां दर्शन हेतु सैकड़ों भक्त दर्शन हेतु पंक्तिबद्ध खड़े थे जहां पर हम सभी भी क्रमानुसार चलकर दर्शन किया ।

पंढरपुर पावन भूमि है जहां पर जनाबाई सन्त ज्ञानेश्वर सन्त तुकाराम सन्त नामदेव जी हुए हैं जहां भगवान श्री हरि विठ्ठल व रूकमणी जी का स्थान है व चन्द्रभागा नदी भी है इस प्रकार दर्शन के बाद वहां श्री गुरू महाराज जी प्रेमी सामतानी परिवार के घर पधारे जिन्होने पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का दर्शन कर बाग बहार हुए। भोजन भजन के बाद पल्लव पाकर वापस शोलापुर आये रात्रि 9.30 से 11 बजे तक सत्संग प्रवचन किये जिसमें भक्त मूलचन्द, सन्त लक्ष्मण, सन्त हरीओम लाल व श्री गुरू महाराजजी ने सत्संग के अमृत से सारी संगत को कृतार्थ किया ।

भागलकोट, कर्नाटक (18से 19 अक्टूबर 2003)

त्रिवेणी तीर्थ दर्शन

दिनांक 18 अक्टूबर को पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा 5 घंटे यात्रा कर भागलकोट पधारे जहां पर प्रेमी श्री गोरधनदास कौशल्या देवी धर्मदास लीलावन्ती के निवास पर प्रवास किया। फूलों से सजी जीप पर श्री गुरू महाराज व सन्त मण्ड़ली प्रेमियों सहित पधारे, कई प्रेमी स्वागत हेतु 2 किलोमीटर दूर चलकर बैंड बाजो के साथ फूलों की वर्षा करते हुए श्री आचार्य गुरूवर की जयघोष गानकरते हुए प्रवास स्थल पर आये । प्रेमी भजनलाल, रामचन्द विजय कुमार , राधाकिशन , लक्ष्मण सेवारत थे शाम सत्संग कार्यक्रम के लिए विशाल पंडाल वहीं पर





लगाया गया था, जहां सिन्धी गुजराती कई अन्य जाति के श्रद्धालु दर्शन सत्संग का लाभ लेकर प्रसन्न हुए । द्वितीय दिवस प्रातःकाल 6 बजे 40 किलोमीटर दूर त्रिवेणी नदी व मंदिर हेतु दर्शनार्थ पहुंचे। श्री कृष्णा नदी, मलप्रभा, घटप्रभा का संगम भी अनूठा था, दर्शन स्नान कर भगवान श्री शंकर भोलानाथ का दर्शन किया जो कि पाताल में नदी के मध्य बना था जहां जाने के लिये 121 सीढ़ियां थीं प्रति सीढी इस प्रकार थी चढ़ते उतरते स्वयं ही भगवान शंकर को परिक्रमा हो जाती है। वहां भोजन प्रसादी कर लेने उपरान्त दोपहर 1 बजे प्रवास स्थल पर आये व सांयकाल सत्संग का कार्यक्रम रहा जिसमें कई सैकड़ों प्रेमियों भक्तों ने भाग लिया ।

पूना (21अक्टूबर 2003)

स्वामी ज्वालानन्द वर्सी उत्सव

भागलकोट यात्रा पूरी कर 20 अक्टूबर रात्रि को महाराष्ट्र के महानगर पूना में पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का स्वागत पूज्य स्वामी रामकृष्ण जी महाराज व प्रेमियों ने किया । अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद आचार्य श्री सद्गुरू स्वामी टेऊराम जी महाराज के अनुज परमपूज्य

स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज का वर्सी उत्सव स्वामी रामकृष्ण आश्रम, अग्रवाल कालोनी पूना में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलायक्ष पूज्यपाद सदगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता व वयोवृद्ध पूज्य स्वामी रामकृष्ण जी महाराज के संयोजन में श्रद्धापूर्वक भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुआ । इस अवसर पर पूज्य स्वामी देव प्रकाश जी महाराज, सन्त अनन्त प्रकाश जी, सन्त हरिओम प्रकाश जी व सन्त मण्डली एवम् विद्यार्थी सन्त भी वर्सी उत्सव में सम्मिलित हुए।

जयपुर (23से 27 अक्टूबर 2003)

दीपावली व कार्तिक उत्सव

श्री प्रेम प्रकाश मण्ड़ल के मुख्यालय श्री अमरापुर धाम में पूज्य स्वामी जी के पावन सानिघ्य में प्रेमियों ने दीपावली उत्सव व कार्तिकोत्सव का आनन्द प्राप्त किया ।

पूना (28से 30 अक्टूबर 2003)

कार्तिक महोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति सदगुरू महाराज की परम्परा को स्थिति रखते हुए श्री सतगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित स्वामी चन्दनराम, सतगुरू टेऊंराम महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम पधारे । सन्त अनंत प्रकाश जी महाराज ने हार्दिक स्वागत किया । अनेक प्रेमी दशनार्थ आये थे जिन्होने फूलमालाओं व जयघोष के मधुर झंकार से स्वागत किया । सांयकाल सत्संग का तीन दिवसीय कार्यक्रम रहा जिसमें सन्त लक्षमण सन्त संजय सन्त श्री मुक्त भक्त मूलचन्द सन्त श्री नामदेव व सन्त हरीओमलाल, सन्त दयाप्रकाश भी शामिल हुए । संत संजय कुमार व सन्त श्री मुक्त ने गुरूवार दिवस पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के गीत गाकर भजन द्वारा सारी संगत को भाव विभोर किया। सन्त हरिओमजी ने भी सन्त सत्संग की महिमा करते हुए बताया शांति सुख आनंद एक ही शब्दों का अर्थ है ।

शांतिअ जो हणु छंडो शांति अचे जीअं मन मुंहिजे खे
किर–किर जो कडु कंडो

धर्म का आचरण श्रेष्ठ कर्मों द्वारा मन की निर्मलता व नाम स्मरण से यह जीव परमतत्व तक पहुंच सकता है

धर्म धरे मन से लड़े , सूरा सो पहिचान
टेऊँ पाले धर्म निज गृहस्थी सो परिवान

स्वामी नामदेव महाराज ने भी अपने वक्तव्य द्व बताया कि

राम भरोसा राख तुम और भरोसा त्याग
कहे टेऊँ हरि शरण ले खोलो अपना भाग

सेवा सत्संग नाम स्मरण से भी शांति यदि न मिली है तो उसका कारण क्या है नाम स्मरण के लि बताया कि विश्वास श्रद्धा सहित जाप किया गया ग एक मूर्ति एक आसन एक समय एक मालहा एक हो चाहिये , हमारे भाग्य हैं सतगुरू स्वामी टेऊंराम महाराज का सानिध्य शरण हमें प्राप्त हुई है उन शिक्षाओं में चारो वेदों का सार है एक एक शिक्षा जी में उतारने के लिये है ।

पिम्परी (31 अक्टू से 2 नवंबर 2003 तक)

कार्तिक महोत्सव

दिनांक 31 शुक्रवार को पूना यात्रा पूर्ण कर पिम्प पधारे, आश्रम पर कई प्रेमियों ने आकर अगवानी आतिशबाजी जलाई, फूलमालाओं से सभा समय सत्स में स्वागत किया पूरा आश्रम चकाचक प्रेमियों से भरा कई प्रेमी बाहर खड़े होकर सत्संग का आनंद ले रहे दीपावली पर्व आतिशबाजी जलाकर किया अपार ज समूह के मध्य सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महार व सन्त मण्ड़ली के साथ पिम्परी में दीपावली पर्व आन सहित मनाया गया। गगनभेदी आवाज वाले फटाके जल गये व श्री गुरू महाराज जी के जय जय कार के स निम्न भजन गाया गया

मिली पंहिजे सतगुरू सां अजु डियारी मलहायूं था
भेनरू वाधायूं डियो गीत अजु गायूं था

1 नवम्बर गुरूनानक गुरूद्वारा पिम्परी में श्री ज्ञा जी द्वारा प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष सतगुरू स्वामी भगतप्रक जी महाराज का स्वागत सरोपा भेंट कर किया गया गुरूद्वारा में सतगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महार सन्त मण्डली प्रेमियों समूह सहित पहुंचे। माला व प्र सरोपा सहित ज्ञानी जी द्वारा स्वागत किया बड़ी प्रसन्न से आपस में मिलें । कार्तिक मास गोपाष्टमी के मह पर सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्ड प्रेमियों सहित फल फूलमाला व आरती चन्दन धूप गौमाता की विधि अनुसार पूजन किया व गायमाता

घास ग्राह दिया ।

पिम्परी में 3 दिवसीय सत्संग का आनंद प्रेमियों ने उत्साह से लूटा, पूरा आश्रम संगति प्रेमियों से पूर्ण भरा था अपितु आश्रम से बाहर सड़क पर खड़े व कुर्सी पर बैठे सत्संग को सुन रहे थे। मानो वृन्दावन सा आनंद रहा इस शुभ अवसर पर इन्द्र देवता ने भी (वर्षा रूप) में फूल वर्षा की । 3 साल का मुझे अनुभव है कि इस अवसर पर जब श्री गुरूवर पिम्परी पहुंचते है तो वर्षा अवश्य होती है। सन्त गुरू ज्ञान वर्षा से सारे जीवों के तत्व हृदय को शांति करके गुणों की सुगन्धि से सुगन्धित करते हैं, इन्द्र देवता वर्षा कर शीतलता देते हैं

चन्दन शीतललोक ने चन्दन ते शशि शीत
चन्दन चन्द्रहियुगल ते सत्संग निर्मल नीत

हरि परमात्मा का नाम सत्संग शीतलता व निर्मलता प्रदान करता हैं ।

लोनावाला सत्संग (2 नवंबर 2003)
कार्तिक महोत्सव

दिनांक 2–11–2003 प्रातःकाल को लोनावाला में प्रेम प्रकाश आश्रम स्वामी टेऊंराम मंदिर की पावन भूमि पर सत्संग समागम आयोजन पिम्परी प्रोग्राम मध्य से सतगुरू स्वामी भगत् प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली प्रेमियों सहित लोनावाला में पधारे, जहां प्रेमी श्री भगवान दास तनवाणी सतगुरू महाराज की अगवानी हेतु पधारे व फूलमाला से स्वागत कर अपने निवास पर ले आये तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश आश्रम भूमि पर ले आये, जहां विशाल पंडाल स्टेज सहित सजा था, अपार जन समूह दर्शन सत्संग की बाट देख रहे थे । जहां पर सन्त संजय ने भजन गाया उन दासों के दुख दूर करो जिनलिया तेरा भरवासा है । तत्पश्चात् श्री सतगुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने बताया कि :–

सतगुरू की कृपा बिना सरे न कोई काज
तांते गुर की शरण ले कहे टेऊँ तज लाज

आचार्य सतगुरू टेऊँराम जी महाराज बता रहे हैं कि गुरू की कृपा जीवन में राह रोशन करती है लौकिक पारलौकिक दोनो कार्य गुरू कृपा से पूर्ण होते हैं। बड़े भाग मानुष तन पावा सुर दुलर्भ सद् ग्रंथनि गावा मानव जीवन में मनुष्यत्व तथा मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा व सन्त समागम दुर्लभ मि नता है। अन्त में बताया कि जीवन में जनम से लेकर मृत्यु तक मनुष्य सार को समझ लेवे तो गुरू कृपा से जीवन सुधर संवर जाय । अन्त में आरती होकर पल्लव पाया तत्पश्चात् मेजबान की अपनी कैन्टीन द्वारा बना हुआ नाश्ते का सारी संगति को प्रसाद दिया गया। सतगुरू टेऊँराम जी महाराज की अमृत वाणी का आनंद लेकर सारी संगति गद्‌गद् हुई व सतगुरू महाराज के प्रति अपार श्रद्धा व प्रेम जाग्रत हुआ, भविष्य में भी आने व दर्शन दिये जाने का विनय प्रार्थना प्रेमियों द्वारा की गयी ।

मुम्बई (3 नवंबर 2003)
कार्तिक महोत्सव

परम पवित्र मास कार्तिकोत्सव की पूर्व परम्परा को निभाते हुए पूज्य महाराज श्री पूना में भगवन्नाम का अमृत पिलाकर मुम्बई पधारे, यहां पर भी कार्तिक मास के उपलक्ष में प्रेमियों को हरि नाम के मधुरातिमधुर रस से परिपूर्ण कर दिया मुम्बई वासियों को पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्ड़ली ने ।

रतलाम, इन्दौर, उज्जैन (4 से 7 नवं.)
कुम्भ मेला छावनी अवलोकन

पूज्य महाराज श्री का मुम्बई से 4 नवंबर को रतलाम पंहुचने पर सन्त शम्भूलाल जी के साथ बड़ी संख्या में प्रेमियों ने रेलवे स्टेशन पंहुचकर स्वागत सत्कार किया । रतलाम में सत्संगामृत का आनंद देते हुए पूज्य महाराज श्री काटजू कालोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में पधारे, यहां पर सत्संग दर्शन की मौज से हजारों प्रेमी लाभान्वित हुए। 6 – 7 नवम्बर को उज्जैन में पूज्य स्वामीजी व सन्त मण्डली का प्रवास रहा । आपको जानकारी में होगा कि अप्रैल मई माह में उज्जैन में सिंहस्थ महापर्व का आयोजन है इसी सिलसिले में स्वामी टेऊँराम प्रेमप्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी) आयोजन के लिये स्वामी जी व सन्त मण्ड़ली की यह उज्जैन यात्रा है व्यवस्थाओं से जुड़े हुए देश भर के प्रेमी भी इस अवसर पर उज्जैन पहुंचे । उज्जयनी तीर्थनगरी में पूज्य महाराज श्री व संत मण्डली द्वारा काशी विश्वनाथ (ज्योर्तिलिंग), सांदीपनि आश्रम, काल भैरव, पाताल भैरव, मंगलनाथ मंदिरों के दर्शन भी किये गये ।

सिन्ध (पाकिस्तान) पहुंचने पर भव्य स्वागत (10 नवम्बर 2003)

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष प्रेम स्वरूप पूज्यपाद सत्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज 9 नवम्बर रात्रि बजे दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल से सन्त मण्डल के साथ दुबई के लिये रवाना हुए, दुबई से अर्धरात्री दू विमान द्वारा पाकिस्तान (सिन्ध) के लिये रवाना हुए । 10 नवम्बर को भारतीय समय अनुसार प्रातः 4:30 बजे (पाक सम 4:00 बजे) कराची अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल पर पंहुचे । जहां पर बड़ी ही बेसब्री से प्रतीक्षारत सैकड़ों प्रेमियों ने मु सर्वानन्द तलरेजा(पूर्व विधायक), भगवानदास चावला व उनके सुपुत्र (वर्तमान विधायक सिन्ध एसेम्बली), कृष्णला जी , भीमनदास जी, गोपीचंद जी, कमल कुमार जी के नेतृत्व में पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्ड़ली का जोरदार स्वा किया गया। औपचारिकताएं पूर्ण होने के पश्चात् पूज्य महाराज श्री व सन्त मण्ड़ली को कारों के एक बड़े काफि के साथ कंधकोट ले जाया गया, जहां पर समाचार प्राप्त होने तक बड़ी ही उत्सुकता व हर्षोउल्लास के साथ पू महाराज श्री के दिव्य दर्शनों की प्रतीक्षा में बड़ी संख्या में सिन्धवासी व्याकुल लग रहे थे । ज्ञातव्य हो कि सि यात्रा पिछले वर्ष आयोजित की गयी थी , लेकिन भारत--पाक के तनाव चलते इसे स्थगित कर दिया गया था सिन्ध यात्रा का पूर्ण विवरण दिसम्बर के अंक में प्रकाशित किया जायेगा ।

संत हरिओमलाल (यात्रा से), कार्यालय डे

मानुष देही का मोल समझें

(अमृत वचन सतगुरू स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज "पूना")

पूरब पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार
कहे टेऊं तिहं सफल कर स्मरे सृजनहार
न तो नामु हरीअ जो यादि कयो
न तो दुख्युनि जो दिलि शादि कयो
न तो मन दुश्मन खे मादु कयो ए बन्दा ए बन्दा
न तो जनमु पाए शुभ कर्म कयो
न तो पाप कर्म खां शर्म कयो
न तो धन मंझा को धर्म कयो ए बन्दा ए बन्दा

सतगुरू टेऊँराम महाराज अपनी वाणी द्वारा उपदेश देते हैं कि ईश्वर द्वारा प्रदत जीवन व मिली हुई शक्ति का पूरा पूरा लाभ लेवें आतम लाल को अथवा जीवन हीरे की जानकारी लेवें सब कुछ पास होने पर हमें ज्ञान नहीं, शरीर की इन्द्रियां ही सज्जन दुश्मन हैं ऐसा शंकराचार्य के द्वारा कहे हुए वचन हैं मन को समझाना ।

देना था सो दे दिया दीनी मानुष देहि,
राम कुछ राख्यो नहीं हरी स्मरण कर लेहि

राजा शिकार करते अपने साथियों में बिछड़ गया रात्रि अंधेरा दूर से एक घर दिखाई दिया भील का झोपड़ी मे रात्रिकाल विश्राम किया भील द्वारा सेवा आसन भोजन दिया फलस्वरूप प्रसन्न होकर बक्शीश में चन्दन वृक्ष का बाग दिया अपितु भील ने अनजाने में काट काट कर सारी चन्दन लकड़ी भोजन बनानें में खर्च की। राजा सैर को निकले भील के यहां आये वैसी ही दरिद्रता पाई तब पूछा तो मालूम हुआ कि अनमोल वस्तु का कदर कर व्यर्थ खर्च कर दी। चन्दन का बाग व लकड़ी एक वृक्ष बचा था जिसकी थोड़ी सी लकड़ी बाजार मे बे ढेर सारी रकम मिली तब पता चला कि मैं तो ब धनवान बन जाता यदि मैं कदर करता ,ऐसे ही परमा ने हमे जीवन व समय व श्वास का खजाना दिया है जि व्यर्थ में लुटा रहे हैं तन चेतन चेतन हेत दियो, अप खजाना छिपा है इस कोट में जिसमें अज्ञान का ता चाबी है सतगुरू नाम ज्ञान की गुरु के पास से प्राप्त हे पर वह हाथ में आ सकता है–

सतगुरू मूंखे चयो विहारे , हीअ कुंजी तू रखिजि संभ
स्वासनि में सभ काल , दिनी तन कोट जी कुंजी गु
कृपाल दिनी तन कोट जी

नाम सतगुरू द्वारा जो प्राप्त है उसे श्रद्धा विश्वास साथ ही सतगुरू टेऊँराम जी महाराज ने स्मरण कि था तो आज उनकी जहां कहां वाणी चरित्र नाम अमर गया–

आसूराम जे महिर मया सां लालु बणियो
संतनि जे दया सां विरह मे वैरागी तुरितु बणियो त्या
करे वियो भजन सचो सन्तु स्वामी टेऊंराम प्यारो करे वियो भजन

हम भी उनकी वाणी सद उपदेश सुनकर प्रार्थ करें हमे भी वह सदबुद्धि मिले नाम स्मरण में मन ल

यपुर समाचार दर्शन

परम मनोहारी सतगुरू टेऊँराम उद्यान



जयपुर– मानसरोवर ,सरयूमार्ग, सेक्टर 53–54 में स्थित ''सदगुरू टेऊँराम उद्यान '' का लोकार्पण गत 12 जुलाई 2003 शनिवार के पावन दिवस पर पूज्य महाराज श्री महापौर ,उपमहापौर , उद्यान समिति अध यक्ष ,पार्षद एवं जयपुर नगर निगम के पदाधिकारी आदि व बड़ी संख्या में प्रेमियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था।

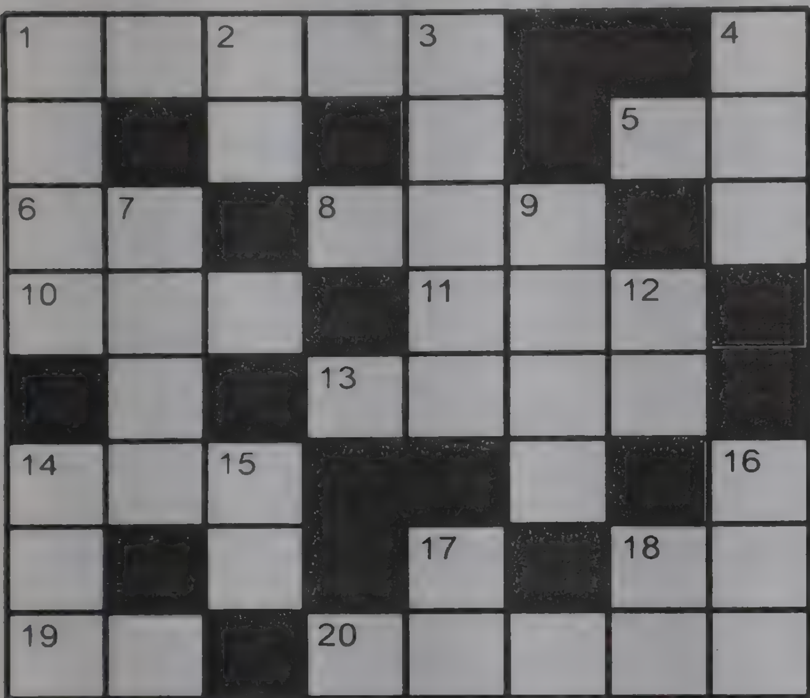
इस विशाल उद्यान में प्रातः व सॉयकाल हजारों नागरिक भम्रण कर परम मनोहारी सुख प्राप्त करते हैं। उद्यान के मुख्य द्वार भी आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं। जयपुर के भक्तों को सद्गुरू टेऊँराम उद्यान का दर्शन अवश्य करना चाहिए ।

सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १०७ वां जन्मोत्सव संपन्न

ग्वालियर में भी मची धूम

परम पूजनीय महर्षि सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द ी महाराज का 107 वां जन्मोत्सव 5 अक्टूबर से अक्टूबर 2003 तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर हित देश विदेश के समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों श्रद्धा व भक्तिमय वातावरण में भारी हर्षोत्साह साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री द्भगवतगीता व श्री प्रेमप्रकाश ग्रंथ के पंचदिवसीय ठ ,हवन ,आम भंडारे के साथ साथ विशेष त्संग सभाओं का आयोजन भी किया गया। ज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज पावन सानिध्य में हरियाणा वासियों ने पिनगंवा थीन ,पलवल में जन्मोत्सव का आनन्द लिया। कार्ता वासियों ने संत हरिओम प्रकाश जी की रस्थिति में जन्मोत्सव को मनाया। बड़ौदा आश्रम पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के निध्य में हजारो प्रेमियों ने जन्मोत्सव का आनन्द लूटा। कामठी के स्वामी शांति प्रकाश मंदिर से भी जन्मोत्सव मनाए जाने का समाचार मिला हैं। ग्वालियर में पंच दिवसीय महोत्सव के अंतर्गत प्रभातफेरी के अतिरिक्त युवा वर्ग व बालक मंडली द्वारा सद्गुरू महाराज जी के जीवन से संबंधित लघु नाटकों की बडी सशक्त प्रस्तुति प्रभावशाली रही। जनाबाई के कंडो से हरिनाम की गूंज (नाटक) ने सम्पूर्ण आश्रम परिसर में खचाखच भरे प्रेमियों को भक्ति भाव से सराबोर कर दिया। चैतन्य महाप्रभु भक्ति की अद्भुत मिसाल की प्रस्तुति के चरम में प्रस्तुतकर्ता सहित क्या अभिनय करते हुए कलाकार ,क्या प्रेमी ,सभी की आँखें भक्तिमय प्रेम के अश्रुओं से भींग गई। कुछ क्षणों के लिए तो जैसे हजारो प्रेमियों की उपस्थिति के बावजूद नीरव शांति सी हो गई ,दृश्य था –विष्णुप्रिया का हरि चैतन्यु महाप्रभु में जीवंत समा जाना।

आध्यात्मिक वर्ग पहेली -१



सही हल आगामी अंक में देखें :–
सही हल भेजने वालो के नाम आगामी अंक में प्रकाशित किये जाएगें । सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर 5 दिसंबर तक कार्यालय में भिजवायें ।

पता
प्रेम प्रकाश संदेश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ
लश्कर, ग्वालियर – 474001

वर्ग–पहेली

बाएँ से दाएँ :

1. स्वामी श्री टेऊँराम जी के दादा. (5)
5. रामायण के उत्तर . . . . . में कथा महात्म्य व भक्ति की महत्ता वर्णित है .(2)
6. जिस ने स्वाध्याय, सत्संग से स्वयं को पहचाना वही . . . . . है . (2)
8. दलित. वर्ग की महिला जिसने गौतम बुद्ध को खीर खिलाई . (3)
10. 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए' रचने वाले कवि . (3)
11. जाति–धर्म–धन पर ध्यान न देकर सबको बराबर समझने का भाव . (3)
13. तप भंग करने की चेष्टा करने वाले इस रति–पति कामदेव को शंकर ने भस्म कर दिया . (4)
14. वीणा–पुस्तक धारिणी देवी भगवती . (3)
18. रावण का एक भ्राता जिसे दूषण के साथ श्री राम ने मारा . (2)
19. शरीर को कष्ट देकर इन्द्रियों को वश में रखने का साधन . (2)
20. अपने अल्प ज्ञान को पूर्ण मानकर बाह्य जगत को न जानने –समझने वाला. (2,3)

ऊपर से नीचे :

1. गुरू की सीख , ईश्वर की कृपा व अपनी लगन से प्राप्त अन्तर प्रकाश .(4)
2. शिव का वाहन . (2)
3. योग में सरलता से किया जाने वाला एक आसन . (5)
4. बन जिसमें श्री कृष्ण के आदेशानुसार अर्जुन ने आग लगाई . (3)
7. सत्य–असत्य , सही–गलत में अन्तर व विवेचन करने का विवेक . (2,2)
9. प्रवृत्तियाँ जो पाप अथवा दुष्कर्मो की ओर प्रेरित करें . (4)
12. शत्रुओं ने ईसा–मसीह को काँटो का . . . . . पहनाया . (2)
14. चिरंतन ; जो कभी नष्ट न हो ; जो नश्वर न हो ; सदा रहने वाला . (3)
15. पुण्य प्रथवा सत्कार्य हेतु दिया गया धन व सम्पत्ति . (2)
16. भव सागर से पार उतारने वाला कर्णधार , ओऽम् रामायनमः , षडाक्षर मंत्र . (3)
17. किसी मंत्र प्रथवा नाम की विधिवत गिनकर आवृत्ति . (2)
18. स्वामी टेऊँराम जी की जन्मस्थली . (2)

प्रस्तुति : सुधा जौहरी, जयपुर

ॐश्री सत्नाम साक्षी

श्री सद्गुरू टेऊँराम गौशाला

उद्घाटन समारोह
एवं

विशाल पशु चिकित्सा शिविर का शुभारम्भ
21 दिसम्बर 2003 शनिवार प्रातः 10 बजे

उदघाटन पूज्य गुरूवर
स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज करेगें

थान :सद्गुरू टेऊँराम गौशाला
पृथ्वीराज नगर, मानसरोवर, जयपुर

33 वां श्री गीता जयंती महोत्सव

4 से 8 दिसंबर 2003 तक
पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में

कार्यक्रम

4 दिसंबर 2003 गुरूवार

प्रातः 8 बजे श्रीमद् भगवतगीता के 108 पाठ
व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ का शुभारम्भ
प्रातः 11 बजे श्री गुरु ग्रंथ साहब के अंखण्ड पाठ का शुभारम्भ

5 दिसंबर से 8 दिसंबर 2003 तक

प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक
श्रीमद् भगवतगीता की पूजा व सत्संग
प्रतिदिन सायं 5 बजे से रात्रि 8 बजे तक सत्संग

8 दिसंबर 2003 सोमवार

प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक हवन, ध्वजा वंदन, पाठो के भोग,
सत्संग, दोपहर 12 बजे से आम भंडारा
सायं 5 बजे से रात्रि 8 बजे तक सत्संग व साध्वी मीरा देवी जी का
जन्मोत्सव व पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति
स्थानः श्री मीरा कृष्ण मंदिर ट्रस्ट, 19 सिंधु पार्क, संत कंवर कॉलोनी, बड़ौदा

तीज त्यौहार

नवंबर	2003	रविवार	वृश्चिक संक्रान्ति
नवंबर	2003	गुरूवार	उत्पति एकादशी व्रत
नवंबर	2003	रविवार	अमावस्या
नवंबर	2003	मंगलवार	चन्द्रदर्शन
नवंबर	2003	गुरूवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
देसबंर	2003	गुरूवार	मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती (श्री शीतल गीता मंदिर, अजमेर व श्री मीरा कृष्ण मंदिर, बड़ौदा में)
देसबंर	2003	सोमवार	पूर्णिमा
दिसबंर	2003	शुक्रवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
दिसबंर	2003	मंगलवार	धनु संक्रान्ति
दिसबंर	2003	शुक्रवार	सफला एकादशी व्रत
दिसबंर	2003	मंगलवार	अमावस्या
दिसबंर	2003	बुधवार	चंद्रदर्शन
दिसबंर	2003	शुक्रवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
दिसबंर	2003	रविवार	सदगुरू टेऊँराम चौथ
दिसबंर	2003	सोमवार	गुरू गोविन्दसिंह जयंती



यात्रा कार्यक्रम



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज का

8 नवंबर	2003		जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
9 नवंबर	2003	रात्रि	दिल्ली	☎ प्रस्थान सिंध पाकिस्तान के लिए
10 नवंबर	2003		कराची	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
11 नवंबर से 13 नवंबर	2003	तक	कन्धकोट	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
14 नवंबर से 15 नवंबर	2003	तक	कशमोर	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
16 नवंबर	2003		बडाणी	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
17 नवंबर	2003		घौंसपुर	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
18 नवंबर	2003		चक	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
19 नवंबर	2003		सखर–टन्डा आदम	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
20 नवंबर	2003		खण्डू–हैदराबाद	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
21 नवंबर	2003		कराची	☎ 0092303–6217243, 0092300–9313175
22 नवंबर	2003		दिल्ली	☎ 094140–41864, 098290–14850
23 नवंबर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
24 नवंबर से 25 नवंबर	2003	तक	मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
26 नवंबर से 27 नवंबर	2003	तक	उल्हासनगर	☎ 094140–41864, 098290–14850
28 नवंबर से 29 नवंबर	2003	तक	जलगांव	☎ 0257–2236713
30 नवंबर	2003		भुसावल	☎ 02582–240197
1 दिसंबर से 2 दिसबंर	2003	तक	बुरहानपुर–रावेर	☎ 07325–252544, 252977
3 दिसंबर	2003		जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
4 दिसंबर	2003		अजमेर	☎ 0145–2622526
5 दिसंबर से 8 दिसबंर	2003	तक	बड़ौदा	☎ 0265–3093554
9 दिसंबर से 10 दिसबंर	2003	तक	अजमेर	☎ 0145–2423993, 2625416
11 दिसंबर	2003		जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
12 दिसंबर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
13 दिसंबर से 15 दिसंबर	2003	तक	हिसार	☎ 01662–244708
16 दिसंबर से 20 दिसंबर	2003	तक	हरिद्वार	☎ 01334–260815, 260144
21 दिसंबर	2003		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
22 दिसंबर से 26 दिसंबर	2003	तक	अहमदाबाद	☎ 079–2863900
27 दिसंबर से 28 दिसंबर	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
29 दिसंबर से 5 जनवरी	2003–04		मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
6 जनवरी से 7 जनवरी	2004	तक	नासिक	☎ 0253–2513415

सदगुरू टेऊँराम महिमा भजन

तर्ज पानी लेने के बहाने आ जा

टेऊँराम मन तू भजले टेऊँराम तुझे मिल जायेगें !
क्या गर्व करें दौलत का ओ —ओ
कि दौलत यहीं रह जाएगी !
टेऊँराम भजले ओ टेऊँराम भजले
कि टेऊँराम तुझे मिल जायेगें ————1
क्या गर्व करें बेटों का ओ———ओ
कि बेटे तो बहु ले जायेगी !
टेऊँराम मन तू भजले टेऊँराम तो तुझे मिल जायेगें——1
क्या गर्व करें बंगलों का ओ———ओ
कि बंगले तो यहीं रह जायेगे
टेऊँराम भजले टेऊँराम भजले ———1
क्या गर्व करें बेटीयों का बेटीयां तो पराई हो जायेगीं !
टेऊँराम भजले मन तू
टेऊँराम भजले टेऊँराम तुझे मिल जायेंगे !
क्या गर्व करें काया का ओ——ओ
कि काया तेरी जल जायेगी
कि टेऊँराम भजले मन तू टेऊँराम भजले
टेऊँराम तुझे मिल जायेगें !

रमेश गम्बानी, गोंदिया

तर्जः तुमसे मिलने को जी चाहता है

टेकः साँई टेऊँराम के दर्शन को जी चाहता है

रूप साँई का सब को लुभाता है,
मुखड़ा साँई का सदा मुस्कुराता हुआ
हाथ साँई का देता सब को दुआ
जाने कैसा साँई में जादू भरा
साँई पे मिटने को जी चाहता है !
दूर करते है सब की परेशानीयाँ
और अंधेरे को देते रोशनियाँ
साँई सहारा है कलयुग में सबका
साँई को पाने को जी चाहता है !
साँई का दरबार भक्ति का भण्डार है
आता जो यहाँ पा जाता सच्चा प्यार है
सब जमाने की खुशियाँ तो मिलती यहां
सर झुकाने को जी चाहता है !
तेरी प्रेमी रहूं तेरी चाहत मुझे
तू बसे दिल में मिलती है सहत मुझे
हर जनम में बनूं बस दासी तेरी
तुझ को मन में बसाने को जी चाहता है !

कान्ता मनवानी, जोधपुर

आओ भक्तों तुम्हें सुनाऊँ महिमा टेऊँराम की ! सिंध–देश के संत शिरोमणि बाबा बेपरवाह की !
चार योगी के दिये वचन सब सिद्ध हुए साकार जी ! आया दिन शनिवार का कृपा हुई भगवान की !
माता कृष्णा की गोद में आये सतगुरू टेऊँराम जी ! जय जय टेंऊँराम ——2
बचपन में ही घर को छोड़ा हरि शरण में आन पड़े ! भक्ति भाव और संत संगत में, हरि दर्शन को जान पड़े !
तन मन धन सब अर्पण करके, ब्रह्म ज्ञान में दृढ़ बने ! निज भक्तों को दर्शन देके सबकी पीड़ा दूर किया !
कभी पलटकर घर में आये कभी जंगल में वास किया !! टेक !!
योग की ज्वाला भड़क उठी, तब भोग भरम सब नास किया ! तन को जीता मन को जीता, जन्म मरण को खत्म किया !
नगर नगर में भ्रमण करके, सबको यह विश्वास दिया ! सतनाम साक्षी का मंत्र जपाकर, भ्रम और संशय दूर किया !
नदी पलटकर घर में आई भक्ति अगम अथाह की !! टेक !!
घर घर में है ज्योति जगाई, प्रेम प्रकाश के नाम की ! खुद भी जपे औरों को जपाए, माला हरि के नाम की !
सतनाम साक्षी मंत्र जपाकर, सब जीवों का उद्धार किया ! साक्षी शिवोऽम् से मन को जोड़े, चौरासी से दूर किया !
नदी पलटकर घर में आई, राम नाम के प्यार की ! टेक ! जै जै टेऊँराम ———

चन्द्र मोहनानी, सिवनी

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. डा. रजि. - 29/18/81-11

भजन

सद्गुरु टेऊँराम महिमा

तर्ज– हम तुम युग–युग से ------

हम सब सतगुरू टेऊँराम की महिमा गाते रहें है गाते रहेंगे
शीश का सतगुरू के चरणों में – झुकाते रहे हैं झुकाते रहेंगे
जब–जब धरती पर भार हुआ–तब–तब तुमने अवतार लिया
कलयुग में टेऊँराम बने सब जीवों का उद्धार किया !
माता कृष्णा के घर आये उनका सपना साकार किया !
पिता चेलाराम जी हर्षाये यह अदभुत इक इसरार हुआ !
हम सब ————————
मुखड़ा तेजस्वी सतगुरू का जैसे हो चांद –सितारो में,
सुन्दर सूरत मोहिनी मूरत–लाखों में एक हजारों में,
सारा जग जिसको नमन करे–धरती अम्बर भी इशारों में
पाया दीदार है सतगुरू का – वो सुख स्वरूप नजारों में
हम सब ————————
बचपन से विषया को त्यागा–मन जोड़ दिया गुरू चरनों में
थी प्रभु मिलन की प्यास जगी– जा भजन किया था जंगलो में !
जगल में मंगल बना दिया सतगुरू ने रेत के टीलो में ,–
आत्म अन्तर वृत्ति लागी शब्द गूंज रहा था हृदय में !
हम सब ————————

कृष्णा कालरा, हथीन (हरियाणा)

तर्ज : मुझे अपनी शरण में ले लो राम ------
टेक : मुझे अपनी शरण में ले लो स्वामी टेऊँराम !
गफलत में मैने जीवन खोया मोह ममता की नीद में सोया !
अब तो दिल मेरी तडफ रही है – कैसे पाऊँ निज धाम !!
सारा जग मैं फिर –फिर आया– आप जैसा कोई नजर ना आया !
तुम्ही मेरे ईश देव हो – तुम ही हो भगवान !!
ना मैं जानू कर्म को करना ना मैं जानू ध्यान को धरना !
जानू तो बस इतना जानू–बडा ऊँचा तेरा नाम !!
मैं तेरा हू मुझे संशय नहीं है –तुम मेरे हो मुझे संशय नहीं है –
अपने मुख से मुझे अपना कहकर – मेरा उत्साह बढ़ाओ मेरे राम !!

कांता देवी
रूकमणी देवी सत्संग मंडली, नेहरू नगर दिल्ली

सूचना

समस्त सम्मानन[illegible] स्यों के सूचना[illegible] उनके प्रेषण पते [illegible] क्रमांक रसीद संख्या [illegible] अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए ।

व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक
श्रीमान्,

KH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOOTANI
E-19, MADHUVAN COLONY,
NAKA MADAR, AJMER (RAJ)

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया ।
सम्पादक शकरलाल सबनानी, फोन : 0751–2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751–2454183